मत्ती

1 [1]इबराहिम का बंसज दाउद की सन्तान इसु मसीह की बंसाबली की किताब ।
[2]इबराहिम से इसहाक पेदा होयो,इसहाक से याकुब,अने याकुब से यहुदा अने उको
भई पेदा होयो , [3]ने यहुदा अने तामार से फिरिस ने जोरह पेदा होया,फिरिस से
हिस्रोन अने हिस्रोन से एराम , [4]ने एराम से अम्मीनादाब पेदा होयो,अम्मीनादाब से
नहसोन अने नहसोन से सलमोन पेदा होयो , [5]सलमोन अने राहाब से बोअज पेदा होयो,
बोअज अने रुत से ओबेद पेदा होयो अने ओबेद से यिसै , [6]अने यिसै से दाउद राजो पेदा
होयो । [7]दाउद से सुलेमान उनी बंइरा से पेदा होयो जो पेंला उरिय्याह की घराळी
थी,सुलेमान से रहबाम पेदा होयो,अने रहबाम से अबियाह ने अबियाह से आसा , [8]आसा
से यहोसाफात पेदा होयो,अने यहोसाफात से योराम ने योराम से उज्जियाह ,
[9]उज्जियाह से योताम पेदा होयो,अने योतम से आहाज ने आहाज से हिजकिय्याह ,
[10]हिजकिय्याह से मनस्से पेदा होयो,अने मनस्से से आमोन ने आमोन से योसिय्याह:
[11]अने बेबीलोन माय बन्दी होवा का बखत योशिय्याह से यकुन्याह अने उको भई पेदा
होयो । [12]बेबीलोन माय बन्दी होवा का बाद यकुन्याह से सालतिएल पेदा होयो,अने
सालतिएल से जरुब्बाबिल,अने [13]जरुब्बाबिल से अबीहद पेदा होयो,अबीहद से
इल्याकीम ने इल्याकीम से अजोर , [14]अजोर से सदोक पेदा होयो,अने सदोक से अखीम
ने अखीम से इलीहुद , [15]इलीहुद से एलीआजार पेदा होयो अने एलीआजार से मत्तान ने
मत्तान से याकुब , [16]याकुब से युसफ पेदा होयो जो मरियम को घराळो थो,अने मरियम
से इसु पेदा होयो जो मसीह केवाय हे । [17]अस्तरां इबराइम से दाउद तोड़ी सगळी चवदा
पीढ़ी होइ,अने दाउद का बखत से बेबीलोन की बन्धुवइ तोड़ी चवदा पीढ़ी ने बेबिलोन की
बन्धुवइ से मसीह तोड़ी चवदा पीढ़ी होइ । [18]अने मसीह को जनम अस्तरां होयो के जदे
उकी मेतारी मरियम की सगई युसफ का साथे होइ,तो उणका मिळवा से पेलांज वा
पवित्तरआत्मा आड़ी से गरभ से थी ! [19]उको धणी धरमी होवा की वजां से उके बदनाम
नी करवा की मर्जी से छाने-छाने छोड़वा को मनसुबो करीरियो थो । [20]पण जदे उ
सोचिजरियो थो तो सरग को एक सरगदुत सपना माय उके यो केता नजर आयो,"हे
युसफ दाउद का बेटा,तू मरियम के अपणी घराळी बणावा से मती डर,क्योके जो उकी
कोख माय हे उ पवित्तरआत्मा आड़ी से हे । [21]वा बाळक जणेगा अने तू उको नाम इसु
राखजे,क्योके उ अपणा लोग हुंण के उनका पापहुंन से तारी देगा ।" [22]यो सगळो इकासरु

होयो के परभु ने जो बचन नबी से केवआड़ियो थो उ पुरो होय ; [23] "देखो,एक कुंवारी गरब
धारेगा,वा एक बाळक जणेगी अने उको नाम इसु राख्यो जायगा ।" जिको अरथ
'परमेसर हमारा साथे,। [24] तो युसफ नींद से जागीग्यो अने परमेसर का सरगदुत का
हुकम से उके ब्याव करी ने लियायो । [25] अने मरियम कने तत्तक नी ग्यो जत्तक उने
बाळक नी जन्णयो अने युसफ ने उको नाम इसु राख्यो ।

2 [1] राजा हेरोदेस का दणहुंण माय जदे यहुदिया का बैतलहम माय इसु को जनम
होयो ,तो देखो उगणुं आड़ी से जोतिसी यरुसलेम माय पोंहची के पुछवा लाग्या ,
[2] यहुदिहुंण को राजो जिको जनम होयो कां है ? क्योके हमने उगणुं माय उको
तारो देख्यो, अने उके परणाम करवा आया हे " [3] जदे राजा ने यो सुण्यो तो उ अने उका
साथे अखो यरुसलेम घबरइग्यो । [4] तो उने लोग हुंण का सगळा खास याजक हुंण अने
सास्तरिहुंण के भेळा करिके उणसे पुछ्यो के मसीह को जनम कां होणो चइये । [5] उणने
उकासे क्यो,"यहदिया का बैतलहम माय क्योके नबी आड़ी से असो लिख्यो ग्यो :
MAT002006" 6 "है बैतलहम,तू जो यहुदा का परदेस माय हे,तू यहुदा का हाकिम हुंण माय
कोइसे नानो हयनी क्योके थारा माय से एक सासक हिटेगा,जो म्हारी परजा इसराइल
को रखवाळो होयगा ।" [7] राजा हेरोदस ने जोतिसीहुंण के छाने से बुलई उणकासे इनी
बात को पतो लगायो के तारो ठीक कदे नजर आयो थो [8] अने यो कइके उणके बैतलहम
मोकलिया,"जाव,उना बाळक को पतो होसियारी से लगाव,जदे उ तमारे मिळीजाय तो
म्हारे समिचार दीजो के हुं बी जइके उके परणाम करयऊँ ।" [9] राजा की बात सुणी के वी
चली पड़िया,अने देखो,जेना तारा के उणने उगणुं माय देख्यो थो,उ उणका अगड़े-अगड़े
तत्तक चलतो रियो जत्तक के वां पोंहची के उनी जगा अदरे थमीं नी ग्यो जां बाळक थो ।
[10] वी उना तारा के देखी के घणां खुस होया ।" [11] उणने घरमाय जइके उना बाळक के उकी
मेतारी का साते देख्यो,अने जमीन पे लोटीके उके धोक द्यो, (सास्टांग परणाम
करियो)अने अपणो-अपणो थैलो खोलिके उके सुन्नो,लुबान अने गन्धरस को चड़ावो
चड़ायो । [12] तो सपना माय या चितावणी पइके के हेरोदेस कने पाछा मती जावजो,वी
दूसरा मारग से अपणा देस चल्या ग्या । [13] जदे वी चल्या ग्या तो देखो,परभु का दुत ने
सपना माय अइने युसफ से क्यो,उठ्या अने बाळक अने,उकी मेतारी के लइके मिसर
चल्यो जा अने जत्तक हुं नी कुं वांज रिजे,क्योके हेरोदेस इना बाळक के ढुढवा पे हे के उके
मरवई लाखे । [14] उ रातेज उठीके बाळक अने उकी मेतारी के लईके मिसर चल्यो ग्यो ।
[15] अने हेरोदेस का मरिया तोड़ी वइंज रियो,के जो बचण परभु ने नबी से केवाड़ियो थो

पूरण होयो, " म्हने अपणा बेटा के मिसर से तेड़ियो" [16]जदे हेरोदेस ने देख्यो के
जोतिसीहुंण ने म्हारा साते दगो करियो तो उने गुस्सा माय अइके हुकम दइ जोतिसीहुंण
से तय करिया होया बखत मुजब बैतलहम अने उका एरे-मेरे की जगा का सगळा
बाळकहुंण के जो दो बरस या इकसे कम था मरवई लाख्या । [17]तो जो बचण यर्मयाह
आड़ी से क्यो ग्यो थो पूरण होयो : रामाह माय एक चीख, रोणो अने बिलखणो,राहेल
अपणा बाळक सरु रोतां-रोतां सांती नी चावे । क्योके अबे वी नी रिया ।" [19]जदे हेरोदेस
मरिग्यो,तो देखो मिसर माय परभु का एक दुत ने युसफ के सपना माय अईके क्यो ,
[20]उठ्या अने बाळक ने उकी मेतारी के लईके इसराइल का देस माय चल्यो जा,क्योके वी
जो उके मारी लाखणो चाता था,मरी चुक्या है ।" [21]उ उठ्यो अने उकी मेतारी के साते
लईके इसराइदेस माय आयो, [22]पण या सुणिके के अरखिलाउस अपणा पिता हेरोदेस की
जगा पे यहुदिया माय राज करीरियो है,वां जावा से डरियो । फेर सपना माय चितावणी
पईके उ गलील का परदेस माय चल्या ग्या । [23]अने नासरत नामका एक नगर माय
जईके रेवा लाग्या,जिकसे के नबीहुंण से क्यो ग्यो बचण पूरण होय, "उ नसरी केवायगा
।"

3 [1]उना दनहुंण माय योहन बपत्तिस्मा देवा वाळो यहुदिया का माळ माय आयो ।
उ यो कइके परचार करिया करतो थो : [2]"हिरदो बदळो,क्योके सरग को राज कने
अइ ग्यो । " [3]यो उज जिको बखाण यासाया नबी ने यो केता होयो करियो,"माळ
माय एक हेला पाड़वा वाळा को हेलो परभु को मारग तियार करो उकी बाट सुदी बणाव '!
[4]योहन खुद तो ऊँट का रुँवा का लतरा पेरियो अने कमर माय चामड़ा को कमर पेटो
बाँध्यो होयो थो अने टिड्डिहुँण अने सेत उको भोजन थो । [5]तो उका कने यरुसलेम,अखो
यहुदिया अने यरदन का ऐरे-मेरे का अखा इलाका का लोग हिट्याया , [6]जसा-जसा उणने
अपणा पाप के मान्या;उने उणके यरदन नदी माय बपत्तिस्मो करियो । [7]पण जदे उने
नरा फरीसीहुंण अने सदुकीहुंण के बपत्तिस्मो लेवा सरु आता देख्यो तो उनकासे क्यो,"हे
सरप का कणाहुंण तमारे केने चेतइ दियो के आवा वाळा करोध से न्हाटो ? [8]इकासरु
अपणा पछतावा लायक फळ बी लाओ : [9]अने अपना हिरदा माय या मती बिचारो,'हमारो
बाप इबराहिम हे,'क्योके हुं तमार से कुं हुं के परमेसर इना भाटाहुंण से बी इबराहिम सरु
ओलाद पेदा करी सके हे । [10]कुराड़ो अबे बी झाड़ की जड़ पे धरियो होयो हे, अने हरेक

झाड़ जो अच्छो फळ नी लावे, काट्यो अने लाय माय लाख्यो जाय हे । [11]हुं तो तमारे
पाणी से बपत्तिस्मो दूँ हुं ,पण जो म्हारा पाछे अइ रियो हे-उ म्हारसे इतरो सक्तीसाली हे
के हुं उका जूता उठावा लायक बी हयनी-उ खुद तमारे पवित्तरातमा अने लाय से
बपत्तिस्मो करेगा । [12]उको सुपड़ो उका हात माय हे । उ अपणो खळो पुरो सोरेगा,अने
अपणा गँउ के गल्ला माय भेळा करेगा,पण सुक्ला के उनी लाय माय बाळेगा जो बुजवा
की हयनी । [13]तो इसु यरदन का कराड़े योहन कने आयो के उकासे बपत्तिस्मो ले । [14]पण
योहन या कईके उके रोकवा लाग्या, "म्हारे तो थारसे बपत्तिस्मो लेवा कि जरुवत हे, अने
(कंई) तू म्हारा कने आयो हे ?" [15]पण इसु ने जवाब द्यो,"इना बखत तो असोज होवा
दे,क्योके हमारा सरु ठीक हे के अस्तरां सगळी धारमिकता के पूरण करां ।"तो उने उकी
बत मानी ली । [16]बपत्तिस्मा लेवा का बाद इसु झट पाणी से बायरे हिट्यो अने देखो,
अस्मान खुलिग्यो, अने परमेसर का आतमा के कबुतर सरिको उतरतो अने अपणा अदरे
आतो देख्यो । [17]अने देखो, या अकासबाणी होई: "यो म्हारो परेमिलो बेटो हे जिकासे हुं
घणो खुस हुं ।"

4

[1]तो आतमा इसु के माळ माय लइ ग्यो के सेतान से उकी अजमाइस होय ।
[2]जदे उ चाळीस दन अने चाळीस रात उपास करि चुक्यो तो उके भुक लागी ।
[3]अने अजमाइस करवा वाला ने कने अईके उकसे क्यो ,"अगर तु परमेसर को बेटो हे तो
हुकम दइके के ई भाटाहुंण रोटा बणी जाय ।" [4]पण उने ज्वाब द्यो ,यो लिक्ख्यो हे
,'मनख सिरफ रोटा सेज नी ,पण हरेक बचण से जो परमेसर का मुंडा से हिटे हे, जिंदो
रेगा '।" [5]तो सेतान उके पवित्तर नगर माय लइ ग्यो अने मन्दर की चोंटी पे उबो करिके ,
[6]उने उकासे क्यो ,"अगर तु परमेसर को बेटो हे तो खुदीके निच्चे पटकी लाख ;क्योके
लिक्ख्यो हे,' उ थारा बारा मे अपणा दुतहुंण के हुकम देगा, अने वी थारे अदरेक का
अदरेज झेली लेगा ,कइ असो नि होय के थारा पगहुंण माय भाटा से ठेस लागे '।" [7]इसु ने
उकासे क्यो ,यो बी लिक्ख्यो हे: 'परभु अपणा परमेसर के अजमा मत,।" [8]फेर सेतान
उके एक नरा उंच्चा बल्ड़ा पे लइ ग्यो ,अने जगत को अखो राज अने एसआराम (विभव)
देखाड़ीके [9]उने क्यो,"अगर तु म्हारे लोटिके धोक दे तो हुं यो सगळोकंइ थारे दइ दुंवा ।"
[10]तो इसु ने उकसे क्यो, "हे सेतान, दुरो न्हाट, क्योके लिक्ख्यो हे, तु परभु अपणा
परमेसर के धोक दे- अने सिरफ उकीज भगती कर,।" [11]तो सेतान उके छोड़िके चल्यो
ग्यो,अने देखो,सरगदुत अइके उकी सेवा-चाकरी करवा लाग्या । [12]अने जदे उने सुण्यो के

योहन बन्दी बणइ ल्यो ग्यो हे ,तो उ गलील चल्यो ग्यो । [13]अने उ नासरत के छोड़ीके
कफरनहुम माय जो सरवर का कराड़े जबुलुन अने नप्ताली का ईलाका माय हे ,रेवा
लाग्यो । [14]जिकसे के वा बात जो यासाया नबी से कवईगी थी पुरण होय: [15]"जबुलुन
अने नप्ताली का देस ,सरवर का मारग से यरदन पेलांपार ,गेरयहुदिहुंण को गलील- [16]जो
मनख इंदारा माय बेठ्या था उणने बड़ो उजाळो देख्यो । जो मोत का देस अने छायळा
माय बेठ्या था, उणपे एक जोत चळकी ।" [17]उना बखत से इसु यो परचार करनो अने
केणो सुरु करियो: "मन बदळो ,क्योके सरग को राज कने अइग्यो हे ।" [18]गलील सरवर
का कराड़े चलता होया उने दो भईहुंण के याने सिमोन जो पतरस केवातो थो अने उको
भई अन्द्रियास के सरवर माय जाळ लाखता देख्या; वी तो भोई था । [19]उने उणका से
क्यो ,"म्हारा पाछे हुई जाव । हुं तमारे मनख के पकड़वा वाळो बणउंवां ।" [20]वी झट
जाळहुंण के छोड़ीके उका पाछे चली पड़िया । [21]वां से आगे बड़ीके उने दुसरा भईहुंण,
याने जब्दी को बेटो याकुब अने उको भई योहन के देख्यो जो अपणा बाप जब्दी का साते
नाव पे जाळहुंण सांधी रिया था, अने उने उणके तेड़िया । [22]वी झट अपणी नाव अने
पिता के छोड़िके उका पाछे चली पड़िया । [23]इसु अखा गलील माय डोलतो-फिरतो उणका
पराथनाघरहुंण माय परबचण देतो,राज को सुबसमिचार परचार करतो,अने मनखहुंण
की हरतरां की बेमारी अने हरतरां की कमजोरी के परे करतो फिरियो । [24]अने उकी चरचा
अखा सीरिया माय फेलिग्यी अने लोग नरा बेमारहुणं के जो नरीतरां की बेमारीहुंण अने
दुखहुंण से पीड़ित था, अने जिणका माय बुरी आतमा थी, मरगी वाळाके, लकवा मारिया
होया सगाळा के उका कने लाया, अने उने उणके अच्छो करियो । [25]अने गलील अने
दिकापुलिस अने यरुसलेम अने यहुदिया अने यरदन नददी का पेलापार से हुजुम को
हुजुम उका पाछे चली पड़ियो।

5 [1]इनी भीड़ के देखी के उ परबत पे चड़िग्यो, अने जदे बेठिग्यो तो उका चेलाहुंण
उका कने आया । [2]तो उ अपणो मुन्डो खोलिके उणके यो परबचण देवा लाग्यो;
[3]"धन हे वी जो मन का सुदा हे ,क्योके सरग को राज उणकोज हे । [4]धन हे वी जो
दुख्या हे क्योके वी तस्सल्ली पायगा । [5]धन हे वी जो नरम हे ,क्योके वी धरती का
हाकिम होयगा । [6]धन हे वी जो धरम का भुका अने तिरसिया हे, क्योके वी तिरप करिया
जायगा । [7]धन हे वी जो दयालु हे ,क्योके उणका पे दया करी जायगा । [8]धन हे वी

जिणका हिरदा साफ हे,क्योके वी परमेसर के देखेगा । [9]धन हे वी जो मेळ करवाणे वाला
हे ,क्योके वी परमेसर का बेटा केवायगा । [10]धन हे वी जो धरम सरु सताड़िया जाय
हे,क्योके सरग को राज उणकोज हे । [11]धन हो तम,जदे लोग म्हारा सरु तमारे
कोसे,तमारे दु:ख दे अने झुठ बोली-बोली के तमारा बिरोध माय सगळी तरां की बातहुंण
के - [12]खुस अने मगन रो,क्योके सरग माय तमारा सरु फळ बड़ो हे । उणने तो उना
नबीहुंण के बी जो तमार से पेलां होया था अस्तरां सताड़िया था । [13]तम धरती का लुण
हो । पण अगर लुण खुद सुवाद खोई दे तो उ पाछो किकसे खारो करियो जायगा ? उ कंई
काम को हयनी सिरफ इका के बायरे फेंक्यो जाय अने मनख का पग तळे कुचळ्यो जाय
। [14]तम जग का उजाळा हो । परबत पे बस्यो होयो नगर छिपी नी सके । [15]तमारो
उजाळो मनखहुंण का सामे अस्तरां चिळके के वी तमारा अच्छा कामहुंण देखीके तमारा
पिता की, जो सरग माय हे,बढ़ई करे । [16]लोग दियो बाळी के टोपला का निच्चे नी पण
अदरे धरे, अने उ घर का सगळा मनख के उजाळो करे हे । [17]यो मती जाणो के हुं नेम
अने नबीहुंण की किताब के खतम करवा आयो । खतम करवा नी, पण पुरण करवा
आयो हुं । [18]क्योके हुं तमार से साँची कूं के जत्तक असमान अने धरती टळी नी जाय,नेम
माय से इक हरुक अने टिपकी बी, जत्तक के सबकंई पूरन नी हुई जाय,नी टळेगा ।
[19]इकासरु जो बी इना नाना से नाना हुकम के नी मानेगा अने असीज सिक्छा दुसरा के
देगा,उ परमेसर का राज माय नानो से नानो केवायगा;पण जो उणको पाळन करे अने
दुसरा के बी सिखाड़ेगा,उ परमेसर का राज माय बड़ो केवायगा । [20]क्योके हुं तमार से कूं
के जत्तक तमारो धरमीपण सास्तरी अने फरीसिहुंण का धरमीपण से जादो हयनी तो
तम परमेसर का राज माय भितरे कदी जई नी सकोगा । [21]“ तम सुणि चुक्या हो के
पुरखाहुंन से क्यो ग्यो थो,‘ धात नी करणों’ अने ‘ जो धात करेगा, उ कचेरी माय
सजा का लायक ठेरेगा ।’ [22]पण हुं तमार से कूं के हरेक जो अपणा भई पे करोध करे उ
कचेरी माय सजा का लायक ठेरेगा;अने जो कोंई अपणा भई के निकम्मो केगा उ बड़ी
कचेरी माय दोसी ठेरेगा ;अने जो कोंई केगा,‘ अरे मुरख,’ उ नरक की लाय का सजा
लायक होयगा । [23]इकासरु अगर तू अपणो चड़ावो बेदी कने लाय अने वां थारे रियाद
आय के म्हारा भई के म्हारा आड़ी से कंई बिरोध हे , [24]तो अपणो चढ़वो बेदी का सामे
लाख अने जइके पेलां अपणा भई से मिळाप करिले अने पाछो अईके अपणो चड़ावो चड़ा
। [25]जदेकी तू मारग मेज अपणा वादी का साते हे ,तो उकासे झट मेल-मिळाप करिले
,कंई असो नी होय के वादी थारे न्यावधिस का सुपरद करिदे ,अने न्यावधिस थारे

हाकिम का,अने तु जेलखाना माय लाख्यो जाय । [26]हुं थारसे साँची कूँ,जत्तक तु पई-पई
चुकई नी लाखे तत्तक वां से छुटि नी सकेगा । [27]तम सुणि चुक्या हो के क्यो ग्यो
थो,ब्योबिचार नी करणो , [28]पण हुं तमार से कूँ के जो कोई पराई बंईरा पे बुरी नजर लाखे
उ अपणा मन माय उकासे ब्योबिचार करी चुक्यो । [29]अगर थारी जीवणी आँख थार से
पाप कराये तो तु उके हेड़ी के फेंकी लाख,क्योके थारा सरु यो भलो के थारा अंगहुंण माय
से एक नास होय असो नी के थारी अखी काया नरक माय लाखी जाय । [30] अगर थारो
जीवणो हात थार से पाप कराय तो उके काटी के दुरो फेंकी लाख क्योके थारा सरु योज
भलो हे के थारो एक अँग नास हुई जाय,असो नी के थारी अखी काया नरक माय लाखी
जाय । [31]यो क्यो ग्यो थो ;'जो कोई अपणी बंईरा के फारकती देणो चाय उ उके फारकती
दईदे', [32]पण हुं थारसे कूं के हरेक जो ब्योबिचार के छोड़िके दुसरा केना कारण से अपणी
धराळी के फारकती दे,तो उ उकासे ब्योबिचार कराय हे । अने जो कोई फारकती दई होय
से ब्याव करे,उ ब्योबिचार करे हे । [33]फेर,तम सुणिचुक्या हो के पुरखाहुंण से क्यो ग्यो
थो,'तम झुटी सोगन मती खावजो,पण परभु सरु अपणी सोगनहुंण को पुरण करजो ।'
[34]पण हुं तमार से कूं हुं के कदी सोगन मती खाजो; नीतो सरग की, क्योके उ परमेसर
को सिंगासण हे; [35]नीज धरती की,क्योके वा उका पगहुंण की चोकी हे; नीज यरुसलेम
की,क्योके उ महाराज को नगर हे । [36]अपणा माथा की बी सोगन मती खाजो, क्योके तु
अपणा एक बाल के बी धोळो या काळो नी करी सके । [37]पण तमारी बात हां की हां अने
नी की नी रे,क्योके जो कंई इकसे जादा होय हे ,सेतान आड़ी से होय हे । [38]तमने सुण्यो
हे के क्यो ग्यो थो,आँख का बदळे आँख अने दाँत का बदळे दाँत । [39]पण हुं तमार से कुं
के बुरा को सामों नी करणो पण जो थारा जिवणा गाल पे झापड़ मारे तो उका आड़ी दुसरो
फेरी लाख । [40]अने अगर कोई थारपे दावो करिके थारो कुड़तो लेणो चावे तो उके कोट बी
लई लेवा दे । [41]अने अगर थारे कोई बेगार माय एक कोस लई जाय,तो उका साते दो
कोस चल्यो जा । [42]जो थारसे मांगे उके दे ,अने जो थारसे उदार लेणो चावे उकासे मन्डो
मति फेर । [43]तम सुणिचुक्या हो के क्योग्यो थो,'तू अपणा पड़ोसी से परेम राखजे अने
अपणा बेरी से बेर । [44]पण हुं तमार से कूं, अपणा बेरीहुंण से परेम राखो अने जो तमारे
सताड़े,उणका सरु बिणती करो । [45]जिकासे के तम अपणा सरग पिता की सन्तान बणी
सको ,क्योके उ अपणो सूरज भला अने बुराहुंण दोई पे उगाड़े हे ,अने धरमिहुंण अने
अधरमिहुंण दोई पे पाणी बरसावे हे । [46]क्योके तम उणकासे परेम राखो जो तमार से

परेम राखे तो तमारे कंई फळ मिळेगा ? [47] अगर तम सिरफ अपणा भईहुंण केज परणाम
करो हो तो कांको बड़ई को काम करो हो ? कंई गेरजात (गेर यहुदिहुंण) असोज नी करे ?
[48] तो तम सिध्द बणो ,जसो के तमारो सरग पिता सिध्ध हे ।

6 [1] "होसियार ! तम अपणा धरम का काम मनख के दिखावा सरु मती करो ,नी
तो अपणा सरग पिता से कंईज फळ नी पावगा । [2] इकासरु जद तू दान करे तो
अपणा अगड़े-अगड़े बाजो (तुरही के बदले) मती बजवा,जसा ढोंगी लोग, सभाहुंण
अने सेरीहुंण माय करे हे के लोग उणको मान करे । हुं तमार से साँची - साँची कूँ के वी
अपणो फळ पुरण रुप से पई चुक्या हे । [3] पण जद तू दान करे तो थारो जिवणो हात नी
जाणने पाय के थारो डाबो हात कंई करिरीयो हे । [4] जिकासे थारो दान गुपत रे , अने थारो
पिता जो गुपत माय देखे थारे फळ दे । [5] जदे तू पराथना करे तो ढोंगीहुंण सरीको
नी,क्योके लोगहुंण के देखावणे सरु पराथनाघरहुंण अने बाट का मोंड़हुंण पे उबी के
पराथना करणो उणके भाय हे । हुं तमार से साँची कूँ के वी अपणो पुरो फळ पई चुक्या ।
[6] पण जदे तू पराथना करे तो अपणी भितरे कि कोठड़ी माय जा अने किंमाड़ बन्द करिके
अपणा पिता से जो गुपत माय हे पराथना कर ,अने थारो पिता जो गुपत माय देखे थारे
फळ देगा । [7] अने जदे पराथना करे तो गेरजातहुंण जसा बेमतलब कि बातहुंण घड़ी-घड़ी
मती कर,क्योके वी सोचे हे के उणका जादा बोलवा से उणकी सुणी जायगा । [8] इकासरु
उणका सरिका नी बणनो, क्योके तमारो पिता मांगवा से पेंलाज तमारी जरुवत के जाणे
हे । [9] "तो तम अस्तरां पराथना करजो;'हे हमारा पिता,तू जो सरग माय हे,थारो नाम
पवित्तर मान्यो जाय । [10] थारो राज आय । थारी मरजी जसी सरग माय पुरन होवे
हे,असीज धरती पे भी पुरण होय । [11] हमारा दन भर का रोटा(मालवी में रोटा पुर्लिंग है)
आज हमारे दे । [12] अने जसे हमने अपणा कसूरवारहुंण के मांफ करिया असाज हमारा
कसुरहुंण के मांफ कर ; [13] अने हमारे अजमाइस माय मती ला पण बुरई से बचाड़ ;
क्योके राज पराकरम अने म्हेमा सदाज थारी रे । आमीन । ' [14] अगर तम मनख का
कसुर मांफ करोगा तो तमारो सरगपिता बी तमारे मांफ करेगा । [15] पण अगर तम
मनखहुंण का पाप मांफ नी करो तो तमारो पिता बी तमारा कसुर मांफ नी करेगा ।
[16] जद कदी तम उपास करो तो ढोंगीहुंण सरिका उदास नजर मती आव ,क्योके वी
अपणो मुन्डो कुमळायो होयो राखे जिकासे के मनख के उपसी नजर आय । हुं तमार से
साँची कूँ के वी अपणो फळ पई चुक्या । [17] पण तु जदे उपास राखे तो अपणा माथा पे तेल
मळ अने मुन्डो धो , [18] जिकासे के तु मनखहुंण के उपासी नजर नी आय,पण अपणा

पिता के जो गुपत माय हे ;अने थारो पिता जो गुपत माय देखे ,थारे इकोफळ देगा ।
[19]अपणा सरु धरती पे धन भेळो मती करो ,जां किड़ो ने किट नास करे अने जां चोळ्ड़ो
खाद दईके चोरी करे । [20]पण अपणा सरु सरग माय धन भेळा करो ,जां नी तो किड़ो अने
नी किट नास करे अने नीज चोळ्ड़ो खाद दई चोरी करे , [21]क्योके जां थारो धन हे वांज
थारो मन बी लाग्यो रेगा । [22]काया को दियो आँख । इकासरु अगर थारी आँख साफ
हे,तो थारी अखी काया उजाळी रेगा । [23]पण अगर थारी आँख खराब होय तो थारी अखी
काया इन्दारी रेगा । इकासरु जो उजाळो थारा माय हे ,अगर उज इन्दारो हे, तो यो
इन्दारो कसो काळो (घोर) होयगा ! [24]कोइंज मनख दो मालेखहुंण की सेवा-चाकरी
(चाकरी,सेवा के साथ अवश्य जुड़ता हे) नी करी सके, क्योके उ एक से बेर अने एक से
परेम राखेगा ,या उ एक से मिळ्यो रेगा अने दुसरा को मानपाड़ेगा (तुच्छ)। तम
परमेसर अने धन दोई की सेवा-चाकरी नी करी सको हो । [25]एनी वजा हुं तमार से कूँ के
अपणा पराण सरु या फिकर मति करजो के हम कंई खावांगा अने कंई पिवांगा,अने नीज
अपणी काया सरु के कंई पेरांगा । कंई पराण भोजन से अने काया लतरा से बड़िके हयनी
? [26]अस्मान का पखेरुहुंण के देखो के वी नी तो बोय ,नी काटे अने नीज खळाहुंण माय
भेळा करे ,फेर बी तमारो सरगपिता उणके खवाड़े हे । कंई तमारो मोल उणकासे बड़ीके
हयनी ? [27]तमारा माय से असो कुंण जो फिकर करिके अपणी उमर की एक घड़ी बी
बड़ई सके ? [28]लतरा सरु तम कायलेणे फिकर करो ? माळ (का) फूळहुंण के देखो के वी
कसे बड़े ! वी नी तो मेनत करे अने नी काते , [29]फेर बी हुं तमार से कूँ के सुलेमान बी
,अपणा अखा विभव माय उणका माय से एक का सरिका बी लतरा पेरिया होयो नी थो ।
[30]इकासरु अगर परमेसर माळ की घाँस के जो आज हे अने काल भट्टा माय झोकि
जायगा ,अस्तरां सजावे ,तो हे कमबिसासीहुंण ,उ तमारा सरु कायलेणे इणका से जादा
नी करेगा ? [31]इकासरु या कइके फिकर (बिचारो) मती करो के हम कंई खावांगा ? या
'कंई पिवांगा ?' ने कंइ पेरांगा ?' [32]क्योके गेरजातहुंण बड़ा जतन(खुसी) से इनी सगळी
चीजहुंण की हेर(खोज) माय रे ,पण तमारो सरगपिता जाणे हे के तमारे इनी सगळी
चीजहुंण कि जरुवत हे । [33]पण तम पेंला परमेसर का राज अने उका धरम का सोद माय
लग्या रो तो ई सगळी चीजहुंण तमारे दई दी जायगा । [34]इकासरु काल की फिकर मती
करो ,क्योके काल को दन अपणी फिकर खुद करी लेगा । आज का सरु आज कोज दु;ख
नरो हे ।

7 [1]दोष मति लगाड़ो जिकासे तमार पे बी दोष नी लगाड़ियो जाये । [2]क्योके
जस्तरां तम दोष लगाड़ो,अस्तरा तमार पे बी दोष लगाड़्यो जायगा । अने जेना
नाप से तम नापो,उनाज नाप से तमारा सरु बी नाप्यो जायगा । [3]तु कायसरु
अपणा भई की आँख को तिरकलो देखे, अने अपणी आँख को लट्ठ थारे नी सुजे ? [4]अने
अपणा भई से कसे कई सके ,'आ, हुं थारी आँख से तिरकलो हेड़ी लाखूँ ',जदेकी लट्ठ तो
खुद थारी आँख माय हे ? [5]हे ढोंगी ,पेंला खुद की आँख को लट्ठ हेड़िले,फेर थारे अपणा
भई की आँख को तिरकलो हेड़वा सरु साफ नजर आवेगा । [6]पवित्तर चीज कुतराहुंण के
मती लाखो,अने अपणा मोती सूल्ड़ाहुण का अगड़े मती लाखो, कंई असो नी होय के वी
उणके पग तळे घुंदे अने पलटी के तमारे फाड़ी लाखे । [7]मांगोगा तो तमारे मिळेगा ,सोदो
तो पावगा ,खटखटाड़ो तो तमारा सरु खोल्यो जायगा । [8]क्योके हरेक जो मांगे,उके मिळे
,अने जो सोदे उ पाय ,अने जो खटखटाड़े उका सरु खोल्यो जायगा । [9]तमारा माय असो
कुंण हे जो अपणा बेटा के जदे उ रोटा मांगे तो उके भाटा दे ? [10]या मच्छी मांगवा पे
सरप दे ? [11]तो जदे तम बुरा हुइके अपणा बाळकहुंण के भली चीजहुंण देणो जाणो हो तो
तमारो पिता जो सरग माय हे अपना मांगणे वाळाहुंण के भली चीजहुंण हजु जादा
कायसरु नी देगा ? [12]इकासरु जसा के तम चाव के मनख तमारा साते करे , तम बी
उणका साते वसोज करो,क्योके नेम अने नबी योज सिखाड़े हे । [13]सांकड़ा फाटक से
भितरे जाव; क्योके बड़ो हे उ फाटक अने चोड़ो हे उ मारग जो नास आड़ी लई जाय हे
,अने नरा हे जो उकामे जाय हे । [14]पण नानो हे उ फाटक अने साँकड़ो हे उ मारग जो
जीवन आड़ी लई जाय अने थोड़ाज हे जो उके पाय हे । [15]झुठा नबीहुंण से होसियार रो
जो गाडरहुंण का भेष माय तमारा कने आवे हे,पण भितरे से वी भुक्या, फाड़ी लाखणे
वाळा बरगड़ा हे । [16]उणका फळहुंण से तम उणके जाणी लोगा । कंई कांटाळी झांडीहुंण
से अंगूर अने कांटाहुंण से अंजीर तोड़िया जाय । [17]अस्तरां हरेक अच्छो झाड़ अच्छो फळ
दे ,पण बुरो झाड़ बुरो फळ दे हे । [18]अच्छो झाड़ बुरो फळ नी दई सके अने नीज बुरो झाड़
अच्छो फळ दई सके । [19]हरेक झाड़ जो अच्छो फळ नी दे ,काट्यो अने लाय माय झोकी
लाख्यो जाय हे । [20]तो तम उणके फळहुंण से जाणी लोगा । [21]हरेक जो म्हार से,'हे परभु
! हे परभु ! के हे ,सरग का राज माय जई नी सके ,पण जो म्हारा सरगपिता की मरजी पे
चले,उज भीतरे जाइ सकेगा । [22]उना दन नरा लोग म्हार से केगा,' हे परभु ,हे परभु ,कंई
हमने थारा नाम से अगमवाणी नी करी अने थारा नाम से बुरी आतमाहुंण के नी हेड़ी

अने थारा नाम से नरा अचरज का काम नी करिया ?' [23]तो हुं उणकासे साफ कुंवा,म्हने
तमारे कदी नी जाण्या; हे बुरा काम करण्याहुंणो,म्हार से छेटी चल्या जाव । [24]इकासरु
जो कोई म्हारा इना बचणहुंण के सुणीके उणका पे चले ,उ उना ज्ञानी मनख सरिको हे
,जिने अपणो घर सिल्ला पे बणायो । [25]अने पाणी पड़ियो,पूर अई,अन्धीहुंण अई अने
उना घर से टकरई; फेर बी उ नी पड़ियो ,क्योके उकी नीम सिल्ला पे राखी थी । [26]पण
जो कोई म्हारा इना बचणहुंण के सुणे अने उणको पाळन नी करे,उ उना मुरख सरिको
जिने अपणो घर बाळु पे बणायो । [27]अने पाणी पड़ियो,पुरहुंण अई,अन्धीहुंण अई अने
उना घर से टकरई; तो उ पड़िग्यो । 'अने पुरो नास हुइग्यो [28]इको असर यो होयो के जदे
इसु इ बात कई चुक्यो तो भीड़ उका परबचण से दंग री गई, [29]क्योके उ उणके
सास्तरीहुंण सरिको नी ,पण हक से परबचण दई रियो थो ।"

8 [1]जदे उ परबत पे से उतरियो ,तो एक बड़ो हुजुम उका पाछे चली पड़ियो ।
[2]अने देखो तो,एक कोड़ियो उका कने आयो,अने परणाम करिके केवा लाग्यो,"हे
परभु अगर तु चाय तो म्हारे ठीक करी सके । [3]इसु ने हात अगड़े करिके उके
पकड़ियो अने क्यो,"हुं चउ । तु अच्छो हुइजा,"अने कोड़ियो झट अच्छो हुइग्यो [4]अने इसु
ने उकासे क्यो, देखतो ,कोई से कीजे मती,पण जईने याजक के बताड़ ,अने मूसा ने जो
चड़ावो ठरायो चड़ा के उणका पे गवई रे ।" [5]अने जदे उ कफरनहुम भीतरे आयो, तो एक
सुबेदार उका कने आयो अने बिणती करिके [6]केवा लाग्यो,हे परभु,म्हारो नोकर लकवा
को मारियो घर माय पड़ियो होयो घणा दरद से तड़पी रियो हे ।" [7]उने उकासे क्यो," हुं
अईके उके अच्छो करुँवा ।" [8]पण सुबेदार ने ज्वाब मे क्यो,"हे परभु, हुं इका लायक
हयनी के तु म्हारा घरे आय ,पण सिरप बोलिदे म्हारो नोकर अच्छो हुइ जायगा। [9]क्योके
हुं बी सासन का हात निच्चे हुं ,अने म्हारा हात निच्चे सिपई । जदे हुं एक से कूँ ,जा ! तो
उ चल्यो जाय अने जदे नोकर से कूँ ,यो कर !' तो उ करे,।" [10]जदे इसु ने यो सुण्यो तो
अचम्बो करियो अने अपणा पाछे आवा वाळाहुंण से क्यो ,"हुं तमारे साँची कूँ,म्हने
इसराइल का कोइ मनख मायज असो बड़ो बिसास नी पायो । [11]हुं तमार से कूँ के उगणुं
अने आथणु से नरा लोग अईके इबराहिम,इसाक अने याकुब का साते सरग राज माय
जिमवा बेठेगा, [12]पण राजपुत्र बायरे इन्दारा माय फेकी लाखी जायगा;जाँ रोणो अने दाँत
पिसणो होयगा ।" [13]अने इसु ने सुबेदार से क्यो ,"चल्योजा,थारा बिसास का मुजबज

थारा सरु होय ।"अने नोकर उनीज घड़ी अच्छो हुइग्यो । [14]अने जदे इसु पतरस का घरे
आयो,तो उकी सासु के बुखार माय बिछावणा पे पड़ी देखी । [15]उने उके हात लगाड़ियो
अने उको बुखार उतरिग्यो,अने वा उठीके सेवा-चाकरी करवा लागी । [16]अने जदे दन
अस्तियो,तो वी नरा बुरी आतमा से भरिया होया लोगहुंण के उका कने लाया अने सिरप
उका बोलवा पेज उनी बुरी आतमाहुंण के हेड़ी अने सगळा जो बेमार था के अच्छा करिया
, [17]जिकासे के जो बचण यासाया से केवायो ग्यो थो उ पूरण होय:"उने खुद हमारी
कमजोरीहुंण के लईली अने बेमारीहुंण के परे लाखी ।" [18]इसु ने जदे अपणा चारी आड़ी
हुजुम के देख्यो,तो उने पेलां पार जावा को हुकुम द्यो । [19]अने कसा सास्तरी ने अईके उके
क्यो ,"गरु, जां कंई तु जायगा,हुं थारा पाछे चलुंवा ।" [20]इसु ने उकासे
क्यो,"व्याकसळीहुंण की खो अने असमान का पखेरुहुंण का घोंसळा होय,पण मनख का
बेटा सरु माथो धरवा सरु बी कंई जगा हयनी ।" [21]उका चेलाहुंण माय से कोइने उकासे
क्यो,"परभु,पेंला म्हारे हुकम दे के हुं जईने म्हारा पिता के गाड़ दूं । [22]पण इसु उकासे
क्यो ,म्हारा पाछे चल्यो आ अने मुरदाहुंण के मुरदा गाड़वा दे ,।" [23]जदे उ नाव पे
चड़ीग्यो तो उका चेला उका पाछे चली पड़िया । [24]अने देखोतो,समन्दर माय बड़ो
बगोळियो उठ्यो जिकासे नाव लेरहुंण से ढंकीग्यी;पण उ सोइरियो थो । [25]वी उका कने
आया अने उणने यो कइके उके जगाड़ियो, परभु ,हमारे बचाड़ ! हम मरिया जइरिया हे
।" [26]उने उणकासे क्यो ,हे कम-बिसासीहुंण ,तम कायसरु इतरा डरिया होया हो ?"तो
उठिके उने समन्दर के ललकारियो,अने सगळो सांत हुइग्यो । [27]अने वी अचरज करिके
केवा लाग्या,"यो कसो मनख ,के बगोळियो अने समन्दर बी उको हुकम माने ? " [28]अने
जदे उ दुसरा आड़ी गदरेनियो का इलाका माय पोंच्यो,तो दो मनख जिणकामे बुरी
आतमाहुंण थी कबर से हिटीके उकासे मिळ्या,वी इतरा खतरनाक था के कोई बी उना
मारग से नी हिटी सकता था । [29]अने देखोतो, उणने चिल्लईके क्यो ,"हे परमेसर का
बेटा ,हमारे थारसे कंई काम ? कंई तु यां हमारे दु:ख देवा आयो हे ?" [30]थोड़ाक दुरा पे
नरा सुवळाहुंण को टोळो चरीरियो थो । [31]बुरी आतमाहुंण उकासे या कई के बिणती
करवा लागी ,अगर तु हमारे निकाळणो चावे तो हमारे सुवळाहुंण का टोळा माय मोकली
दे ।" [32]उने उणकासे क्यो ,"जाव !"अने वी हिटी के सुवळाहुंण माय भरईग्यी ,अने देखो
,उ अखो टोळो जोरसे कराड़ा पे जई समन्दर माय पड़िग्यो अने डुबी मरियो । [33]ग्वाळा
भागिके नगर माय ग्या ने बुरी आतमा से भरिया मनखहुंण पे कंई बित्यो थो ने एका
साते-साते अखो हाल कई सुणायो । [34]अने देखोतो ,अखा नगर का लोग हिटीके इसु से

मिळवा आया ,अने जदे उणने उके देख्यो ,तो उकसे बिणती करी के हमारा इलाका से बायरे हिटी जा ।

9 [1]उ नाव पे बेठ्यो ,अने पार उतरिके अपणा नगर माय आयो । [2]अने देखो,थोड़ाक लोग एक लकवा का मारिया होया के खाट पे लाखी के उका कने ल्याया । इसु ने उणको बिसास देखिके उना लकवा का बेमार से क्यो,"म्हारा बेटा,हिम्मत राख,थारा पाप मांफ होया।" [3]अने देखो, सास्तरीहुंण माय से थोड़ाक माय-माय केवा लाग्या ,"यो तो परमेसर की बुरई करे । [4]इसु ने उणका हिरदा का बिचार जाणीके क्यो,"तम अपणा मनहुंण माय बुरो कायलेणे चितो हो ? [5]सुदो कंई हे ? यो केणो ,' थारा पाप माफ होया ,के यो,' उठ्या अने चल्यो फिर ?' [6]पण इकासरु के तम जाणी लो के मनख का बेटा के धरती पे पाप माफ करवा को हक हे -"उठ्या, अपणी खाट उठाड़ अने घरे जा ।" [7]उ उठिके अपणा घरे चल्योग्यो । [8]जदे भीड़ (हुजुम)ने यो देख्यो तो वी डरिग्या अने वी परमेसर की बड़ई करवा लाग्या जेने मनखहुंण के असो हक द्यो । [9]जसेज इसु वां से अगड़े बड़ियो उने मत्ती नाम का एक मनख के चुंगी नाका माय बेठ्यो देख्यो,अने उने उकासे क्यो, "म्हारा पाछे हुइजा !"उ उठ्यो अने उका पछड़े चली पड़ियो । [10]फेर असो होयो के जदे उ घर माय जिमवा बेठ्यो ,देखो नरा नाका वसुलवा वाळा अने पापी अइके इसु अने उका चेलाहुंण का साते जिमवा बेठिग्या । [11]अने जदे फरीसीहुंण ने यो देख्यो तो उका चेलाहुंण से क्यो,"तमारो गरु नाकावसुळवा वाळा अने पापिहुंण साते कायसरु खाय ?" [12]पण जदे उने यो सुण्यो तो क्यो ,"अच्छा-भला के बैद (डाक्तर-अग्रेजी शब्द Doctor का बिगड़ा रुप) की जरुवत हयनी , पण मांदाहुंण के होय । [13]पण जाव अने इको अरथ जाणो : हुं बलिदान नी पण दया चउं । क्योके हुं धरमिहुंण के नी पण पापीहुंण के तेड़वा आयो हुं ।" [14]तो योहन का चेला उका कने अइके केवा लाग्या ,"कंई वजा हे के हम अने फरीसी तो बरत (उपास) राखे , पण थारा चेला बरत नी राखे ?" [15]इसु ने उणकासे क्यो ,"जत्तक लाड़ो बरातियाहुंण का साते रे,कंई वी दु:ख मनाई सके हे ? पण वी दन आवेगा जदे लाड़ो उणकासे एकाड़ी करियो जायगा अने जदे वी उपास राखेगा । [16]जूना लतरा पे नवा लतरा को थेगळो कोई नी लगाड़े ,क्योके थेगळो उना लतरा के खेची ले हे, अने उ पेलां से बी घणो फाटी जाय हे । [17]नीज वी लोग जूनी मसकहुंण माय नवो अंगुर रस भरे ,क्योके असो करवा से मसकहुंण फाटी जाय अने

अंगुर रस बी जाय अने मसकहुंण खराब हुई जाये;पण नवो अंगुर रस नवी मसकहुंण
माय भरे हे अने दोईज बणी रे ।" [18]जदे उ उणकासे या बात करिज रियो थो तो इतरा
माय पराथनाघर को एक हाकिम अईके उके परणाम करिके केवा लाग्यो ,"म्हारी नानी
अभी हाल मरी हे ,पण चलीके अपणो हात उकापे राख वा जिन्दी हुई जायगा ।" [19]इसु
उठ्यो अने इका पछड़े चली पड़ियो अने उका चेलाहुंण ने बी असोज करियो । [20]अने
देखोतो, एक बंईरा जिके बारा बरस से लोई बिवा कि बेमारी थी उका पछड़े अईके उका
चोगा का किनारा के हात लगाड़ी द्यो ; [21]क्योके वा अपणा हिरदा माय बिचारती थी
,अगर हुं उका लतरा केज हात लगाड़ी लुंवा तो अच्छी हुई जउंवा ।" [22]इसु ने पलटी के
उके देख्यो अने क्यो ,"हिम्मत राख थारा बिसास ने थारे अच्छो करियो ।"वा बंईरा उनी
घड़ी अच्छी हुइग्यी । [23]जदे इसु उना हाकिम का घरे पोंच्यो तो उने बंसी बजावा
वाळाहुंण अने भीड़ को मजमो देख्यो । [24]उने उणकासे क्यो , "चल्या जाव क्योके नानी
मरी हयनी पण सोईरी हे ।" इ पे वी उकी मजाक बणावा लाग्या । [25]पण जदे लोगहुंण के
बायरे हेड़ी लाख्या ,तो इसु भीतरे ग्यो अने उने हात पकड़ीके नानी के उठाड़ी, अने नानी
उठिके बेठिग्यी । [26]यो समिचार उना अखा इलाका माय फेलीग्यो । [27]जदे इसु वां से
अगड़े बड़ियो तो दो आंधा उका पछड़े यो चिल्लाता अने तेड़ता होया चल्या , " हे दाउद
की सन्तान ,हमार पे दया करजे !" [28]अने जदे उ घर माय जइ चुक्यो तो वी आंधा उका
कने आया । इसु ने उणकासे क्यो,कंई तम बिसास करो के हुं यो करी सकुं ?" उणने
उकासे क्यो ," हाँ परभु ।" [29]तो उने या कईके उणकी आंखहुंण के हात लगाड़ियो,"तमारा
बिसास मुजब तमारा सरु हुई जाय ।" [30]अने उणकी आंखहुंण खुलिग्यी । इसु ने उणके
काठी चितावणी देतो होयो उणकासे क्यो," देखो , यो कोई के मती बताड़जो ।" [31]पण
उणने जईके अखा इलाका माय उकी चरचा करी । [32]जदे उ बायरे जई रियो थो ,तो एक
गुंगा के ,जो बुरी आतमा से भरियो थो ,इसु कने लाया । [33]अने जदे बुरी आतमा हेड़ि
लाखी , तो गुंगो बोलवा लाग्यो । इ पे भीड़ अचम्भो करिके केवा लागी ," इसराइल माय
असो कदी नी देख्यो ।" [34]पण फरीसी केवा लाग्या ,"उ तो बुरी आतमाहुंण का सरदार की
मदद से बुरी आतमाहुंण के हेड़े हे ।" [35]इसु सगळा नगर अने गामहुंण माय जईके,उणका
पराथनाघरहुंण माय परबचण देतो अने (सरग) राज को सुब समिचार को परचार करतो
अने नरा तरां की बेमारी ने हरतरां की कमजोरी के अच्छो करतो रियो । [36]अने लोगहुंण
का हुजुम के देखीके उके उण पे तरस आयो ,क्योके वी उनी गाडरहुंण सरिका दु;खी अने
उदास था जिणको कोई ग्वाळो नी होय । [37]तो उने अपणा चेलाहुंण से क्यो," फसल तो

नरी हे ,पण मजुरिया थोड़ाक हे । [38]इकासरु फसल का मालेख से बिणती करो के उ
फसल काटवा सरु मजुरिया मोकले । "

10 [1]तो इसु ने अपणा बारा चेलाहुंण के बुलईके उणके बुरी आतमाहुंण पे हक
द्यो के उणके हेड़े अने सगळी तरां की बेमारी ने सगळी तरां की कमजोरी के
अच्छो करे । [2]अबे बारा परेरितहुंण को नाम यो हे: पेलो ,सिमोन ,जो पतरस
केवाय, अने उको भई अन्द्रियास ; जब्दी को बेटो याकुब अने उको भई योहन ;
[3]फिलिप्पुस ,बरतुल्मे, थोमो अने नाको वसुलवा वाळो मत्ती ; हल्फे को बेटो याकुब अने
तद्दे ; [4]सिमोन कनानी अने यहुदा इस्कारयोती, जेने उके पकड़वई लाख्यो । [5]इना
बाराहुंण के इसु ने यो कईके मोकलिया ;गेरजातहुंण कने मती जाजो,अने नी सामरिहुंण
का कसाज नगर माय जावजो । [6]इका बजाय इसराएल का घराणा कीज खोई होई
गाडरहुंण (लोग) कने जाजो । [7]अने जाता होया तम यो परचार करिके कोजो ,' सरग को
राज कने अईग्यो ।' [8]बेमारहुंन के अच्छा करो ,मरिया होया के जिवाड़ो,कोड़ियाहुंण के
सुध्द करो ,बुरी आतमाहुंण के हेड़ो । तमारे फिरी मिळयो फिरी माय दो । [9]अपणी कमर
की अंटी माय नी सुन्नो ,नी चाँदी अने नी तांबो राखजो । [10]जात्रा सरु नी झोळो ,यांतोड़ी
के दो कुड़ता बी नी ,नी जुता अने नी लाकड़ी राखो , क्योके मजुर के जिमवा को हक हे ।
[11]जेना कसा नगर या गाम माय जाव तो पुछी- ताछी लो के वा कुंण लायक हे अने बिदा
होवा तोड़ि वांज रो । [12]जदे तम उना घर माय जाव तो सान्ती को आसीरबाद दो ।
[13]अगर उ घर लायक होयगा तो तमारी सान्ती उना घर माय बणी रेगा ,पण अगर नी हे
तो सान्ती को तमारो परणाम तमारा कने अई जायगा । [14]जो तमारे माने हयनी अने
तमारी बातहुंण पे कान नी धरे, जदे तम उना घर ने नगर से हिटो ,तो अपणा पगहुंण को
धुळो झाटकी लाखजो । [15]हुं तमार से साँची कूं के न्याव का दन उना नगर का बजाय
सदोम अने अमोरा देस को हाल जादा सेणे लायक होयगा । [16]देखोतो, हुं तमारे
गाडराहुंण सरिका बरगड़ाहुंण माय मोकलुं । इकासरु सरप सरिका चातरिया अने कबुतर
सरेका भोळा बणो । [17]पण मनखहुंण से होसियार रिजो, क्योके वी तमारे कचेरीहुंण माय
देगा अने अपणा पराथनाघरहुंण माय तमारे कोड़ा मारेगा । [18]तम म्हारा सरु
राजपालहुंण अने राजाहुंण सामे उबा करिया जावगा के उणकापे अने गेरजात सरु गवा
बणो । [19]पण जदे वी तमारे पकड़ाय तो फिकर मती करजो के हम कंई अने कसे कांगा
,क्योके जो कंई तमारे केणो हे उनी घड़ी तमारे बतई द्यो जायगा । [20]क्योके बोलवा वाळा

तम नी ,पण यो तमारा पिता को आतमो जो तमारा माय बोले । [21]भई अपणा भई के
अने बाप अपणा छोरा के मारी लाखवा सरु देगा , 'अने ओलाद अपणा मां बाप का बिरोध
माय उबा हुईके उनके मरवई लाखेगा ।' [22]म्हारा नाम सरु सगळा तमार से घिरणा
करेगा , पण जो आखर तोड़ी धीरज धरेगा उको उद्धार होयगा । [23]जद कदी वी तमारे इना
नगर माय सताड़े तो दुसरा माय भागी जाजो ,क्योके हुं तमार से साँची कुं के इका पेंला
के तम इसराइलहुंण का सगळा नगरहुंण माय फिरनो खतम करो , के मनख को बेटो
अई जायगा । [24]नी चेलो अपणा गरु से मोटो अने नी नोकर अपणा मालेख से मोटो होय
। [25]चेलो अपणा गरु सरिको अने नोकर अपणा मालेख सरिको हुई जाय योज नरो ।
अगर उणने घर का मालेख के सेतान क्यो तो घर का मनखहुंण के कजा कंई-कंई केगा !
[26]इकासरु उणकासे मति डरो ,क्योके कंई ढांक्यो हयनी जिके उघाड़ियो नी जायगा अने
कंई छिप्यो हयनी जिके जांण्यो नी जायगा । [27]जो हुं तमार से इन्दारा माय कूं उके तम
उजाळा माय को अने जो कंई तम काने -कान सुणो ,उके डागला (मचान) पे चड़िके
परचारो । [28]उणकासे मति डरो जो काया के नास करे पण आतमा के नास नी करी सके
पण उकासे डरो जो आतमा अने काया दोई के नरक माय नास करि सके । [29]कंई एक
पइसा माय दो चिरकली नी बिके ? फेर बी तमारा पिता की मरजि का बिना एक बी
धरती पे नी पड़ी सके । [30]तमारा माथा का बाल बी गिण्या होया हे । [31]इकासरु डरो मति
। तम नरी चरकलीहुंण से बी जादा मोल का हो । [32]तो हरेक जो मनक का सामे म्हारे
मानिले, हुं बी अपणा पिता का सामे ,जो सरग माय हे ,मानी लुंवा । [33]पण जो मनखहुंण
का सामे म्हारे नी माने , हुं बी उके अपणा पिता का सामे ,जो सरग माय हे नी मानुवां ।
[34]"या मति सोचो के हूं धरती पे मेळ-मिळाप करावा आयो । हुं मेल करावा नी ,पण
तरवार चलवाणे आयो । [35]हुं तो इकासरु आयो के छोरा के उका बाप ,छोरी के उकी
मेतारी ,अने लाड़ी के उकी सासु का बिरोधी करी दूं ; [36]अने मनख का बेरी उकाज घर का
लोग होयगा । [37]जो म्हार से जादा अपणा मां ने बाप से परेम राखे ,उ म्हारा लायक
हयनी । जो म्हार से जादा अपणा छोरा ने छोरी से परेम राखे ,उ म्हारा लायक हयनी,
[38]अने जो अपणो कुरुस उठईके म्हारा पाछे नी चले , उ म्हारा लायक हयनी । [39]जो
अपणो पराण बचाड़े ,उ उके खोवेगा ,अने जो म्हारा सरु अपणो पराण खोवे उ उके
पावेगा । [40]जो तमारे माने उ म्हारे माने, अने जो म्हारे माने ,उ म्हारा मोकलवा वाळा के
माने । [41]जो नबी के नबी जाणी के माने उ नबी को फळ पावेगा,अने जो धरमी के
धरमीजण जाणीके मानी ले उ धरमी को फळ पावेगा । [42]जो इना छोटाहुंण माय से कोइं

एक के चेलो जाणीके एक ठंडो गिलास पाणी बी पीवासरु दे तो हुं तमार से साँची कूं के उ
अपणो फळ कदीज नी खोवेगा ।"

11 [1]असो होयो के जदे इसु चेलाहुंण के समझई चुक्यो,तो वां से उ उणका
नगरहुंण माय सिक्छा देवा अने परचार करवा चल्योग्यो । [2]जदे जेळखाना
माय योहन ने मसीह का कामहुंण की चरचा सुणी तो अपणा चेलाहुंण के
उका कने यो पुछवा मोकलिया , [3]"कंई आवा वाळो तु ज हे ,के हम कोई दुसरा की बाट
जोवां?" [4]इसु ने उणके जवाब द्यो ,"जो कंई तम सुणो अने देखो हो जईके उको समिचार
योहन के दइदो; [5]आंधा देखिरिया ,पांगळा चलिरिया, कोड़िया अच्छा हुइरिया,अने बेरा
सुणे,मुरदाहुंण जिवाड़िया जाय अने गरीब-गुरबाहुंण के सुब समिचार सुणायो जईरियो हे
। [6]अने धन हे जो म्हारी वजा से ठोकर खावा से बचिया रे । [7]उणका जाता बखत इसु
भीड़ का लोगहुंण से केवा लाग्यो ,तम माळ माय कंइ देखवा ग्या था ? बायरा से हलता
होया सरकन्डा (एक प्रकार की घास जो नदी किनारे होती हे) के ? [8]फेर तम कंई देखवा
ग्या था ? नरम लतरा परिया होया मनख के ? देखोतो , नरम लतरा पेरवा वाळा
राजमेल माय रे हे । [9]फेर तम कायसरु ग्या था ? कंइका नबी के देखवा सरु ? हां ,अने हुं
तमार से कूं नबी से बी मोटा मनख के । [10]यो उज हे जिका बारा माय लिक्ख्यो हे, देख,
हुं थारा अगड़े अपणा दुत के मोकलुं, जो थारो मारग थारा अगड़े तियार करेगा । [11]हुं
तमार से साँची कूं के बंइराहुंण से जनमिया होया माय योहन बप्तिस्मा देवा वाळा से
मोटो कोइंज नी होयो, फेर बी जो सरग का राज माय नानो से नानो हे , उ उकासे मोटो हे
। [12]योहन बप्तिस्मा देवावाळा का दन से लिके अब तोड़ी सरग का राज माय जबरजस्ती
परवेस होतो रियो अने ताकतवाळो मनख उ पे हक जमातो रे हे । [13]क्योके सगळा नबी
अने नेम ,योहन के आवा की अगमबाणी करता रिया हे । [14]अगर तम एनी बात के
माननो चाव तो योज एलियो हे ,जो आवा वाळो थो । [15]जिणका सुणवा का कान होय उ
सुणीले । [16]हुं एनी पीड़ी को मिलाण किकासे करु ? इ लोग हाट-बजार माय बेठवा वाळा
बाळकहुंण सरिका ,जो दुसरा बाळकहुंण के तेड़े, [17]अने के,हमने तमारा सरु बंसी बजाड़ी
,पण तम नाच्या हयनी : अने हमने दु:ख भरिया गीत गाया पण तमने दु:ख नी मनायो
। [18]क्योके योहन नी तो खातो अने नी पीतो आयो,पण वी के ,उकामे बुरी आतमा हे ।
[19]मनख को बेटो खातो-पीतो आयो अने वी के देखोतो,पेटु अने पिय्यक्कड़,चुंगी लेवा

वाळाहुंण को दोस! फेर बी बुध्दि अपणा कामहुंण से सिध्द होय हे ।" [20]तो उ उना
नगरहुंण के जिकामे नरा अचरज का काम करिया था , उळाणो देवा लाग्यो क्योके उणने
पस्ताप नी करियो थो । [21]" हे खुराजीन ,धिक्कार हे थारपे ! हे बेतसदा ,धिक्कार हे
थारपे ! क्योके जो अचरज का काम तमारा माय करिया ग्या ,अगर वी सुर अने सेदा
माय करिया जाता तो वी नरा पेंला टाट ओड़िके अने राखोड़ा पे बेठी के पस्तावो करि
लेता । [22]फेर बी हुं तमार से कूं के न्याव का दन सुर अने सेदा की हालत तमारा बजाय
जादा सेणे सरिकी होयगा । [23]अने हे कफरनहुम,कंई तु सरग तोड़ी अदरे उठाड़ियो
जायगा ? तु अधोलोक(पाताल)तोड़ी उतरेगा, क्योके जो अचरज का काम थारा माय
करिया ग्या ,अगर वी सदोम माय करिया जाता ,तो उ आज तोड़ी बण्यो रेतो । [24]फेर बी
हुं थार से कूं , न्याव का का दन थारी हालत का बजाय सदोम की हालत जादा सेणे
सरिकी होयगा ।" [25]उनी बखत इसु ने क्यो ," हे पिता ,सरग अने धरती का परभु, हुं थारे
भजुं (स्तुति) , के तने इ बातहुंण ज्ञानी अने बुध्दिमानहुंण से छिपाड़ी के राखी अने
बाळकहुंण पे परगटी हे । [26]हां, पिता, क्योके थारे योज अच्छो लाग्यो । [27]म्हारा पिता ने
म्हारे सगळो कंई समळायो । पिता का अलावा बेटा के कोइनी जाणे , या उज जिकापे
परगटणो चावे । [28]हे सगळा थक्या अने बजन से दब्या लोगहुंण म्हारा कने आव हुं
तमारे अराम दुंवा । [29]म्हारो जुड़ो अपणा अदरे उठई लो अने म्हारसे सिको , क्योके हुं
नरम अने हिरदा माय दीन हुं अने तम अपणा हिरदा माय अराम पावगा । [30]क्योके
म्हारो जुड़ो सबगो अने म्हारो बजन हळको हे ।"

12 [1]तो इसु सबद् का दन खेतहुंण माय से हुइके हिट्यो ; उका चलाहुंण के
भुक लागी अने वी उंबी तोड़ी- तोड़ी के खावा लाग्या । [2]पण जदे फरीसीहुंण
ने यो देख्यो तो उकासे क्यो," देखतो , थारा चेला उ काम करिरिया हे जिके
सबत् का दन करणो ठीक हयनी । [3]इ पे उने उणकासे क्यो ," कंई तमने नी बांच्यो के
जदे दाउद अने उका साथिहुंण के भुक लागी तो उने कंई करियो ? [4]उने तो परमेसर का
मन्दर माय जईके अरपण का रोटाहुंण खाया ,जिणके खाणो नी तो उका सरु अने नी
उका साथिहुंण सरु पण सिरप याजकहुंण सरु ठीक थो । [5]या कंई तमने नेम माय नी
बांच्यो के याजक सबद् का दन मन्दर माय सबद् की रीत के तोड़े हे ,फेर बी निरदोस रे ?
[6]पण हुं तमार से कूं के यां उ हे जो मन्दर से बी बड़िके । [7]अगर तम इको अरथ समझता
,' हुं दया चव हुं बलिदान नी, तो निरदोस के दोसी नी ठेराता । [8]क्योके मनख को बेटो

सबद् का दन को बी परभु हे ।" [9]वां से हिटी के उ उणका पराथनाघर माय ग्यो । [10]देखो
वां एक सुक्या हात को मनख थो । उणने इसु पे दोस लगावा की मन्सा से यो केता होया
सवाल करियो,"कंई सबद् का दन अच्छो करनो ठीक हे ? " [11]उने उणकासे क्यो ,तमारा
माय असो कुंण हे ,जेकी एक गाडर होय,अने वा सबद् का दन खाड़ा माय पड़ी जाय तो उ
उके पकड़ी के बायरे नी हेड़े ? [12]तो एक मनख को मोल, गाडर से कितरो बड़ी के हे !
इकासरु सबद् का दन भलो करनो ठीक हे ।" [13]तो उने उना मनख से क्यो,अपणो हात
बड़ा !" उने बड़ायो,अने उ दुसरा हात सरिको अच्छो हुईग्यो । [14]तो फरीसी बायरे हिट्या
अने उका बिरोध मे सगळा की राय लईके के उके कसे नास करां । [15]पण इसु यो जाणीके
वां से हिटीग्यो । नरा लोग उका पाछे चली पड़िया ,अने उने सगळा के अच्छा करिया ,
[16]अने उणके चेतायो के म्हारे नी परगटे , [17]जिकासे के नबी से जो क्यो ग्यो थो , उ पुरण
होय; [18]देखो ,म्हारो दास जिके म्हने छांट्यो ,म्हारो परेमिलो जिकासे म्हारो हिरदो घणो
खुस हे । हुं उ पे अपणो आतमो रेड़ुवां अने उ गेरजात (गेरयहुदी) पे ठीक न्याव को
समिचार देगा । [19]उ नी तो झगड़ो करेगा अने नी चिल्लायगा ,अने नी कोई उकी अवाज
सेरी माय सुणेगा । [20]उ कुच्या होया सरकन्डा के नी भांगेगा अने धुँओ देती बाती के नी
बुजाड़ेगा ,जत्तक के न्याव के नी जिताड़े । [21]अने उकाज नाम से गेरजात आसा धरेगा ।"
[22]इसु कने बुरी आतमा(बायरे की हवा) से भरिया मनख के लाया जो आंधो अने गुंगो थो
,अने उने उके अच्छो करियो,उ गुंगो बोलवा अने देकवा लाग्यो । [23]इ पे अखी भीड़
अचरज करिके केवा लागी ,"कंई यो मनख दाउद कि सन्तान हुई सके ?" [24]पण जदे
फरीसीहुंण ने यो सुण्यो तो क्यो ," यो मनख बुरी आतमाहुंण के सिरप उणका सरदार
बालजबूल की मदद से हेड़े हे ।" [25]उणका बिचार जाणि के उने क्यो ,जिका राज माय फुट
(भरई जाय)पड़िजाय उ नास हुई जाय हे ,अने जेना नगर या घर माय फुट पड़िजाय उ
बण्यो नी रेगा , [26]अने अगर सेतानज सेतान के हेड़े तो उ अपणो बिरोधी हुईग्यो हे -फेर
उको राज कसे बण्यो रेगा ? [27]फेर अगर हुं बालजबूल कि मदद से बुरी आतमाहुंण के हेड़ु
तो तमारा बेटा केकी मदद से हेड़े हे ? इकासरु वीज तमारो न्याव करेगा । [28]पण अगर हुं
परमेसर का आतमा से बुरी आतमाहुंण के हेड़ु ,तो परमेसर को राज तमारा माय अई
पोंच्यो । [29]या कोई ताकतवर मनख का घर माय भरई के कोई उकी सम्पत्ती कसे उठई
ली जाय जत्तक के उ पेलां उना ताकतवर के बांधी नी लाखे । जेका बाद उ उको घर
लूटेगा । [30]जो म्हारा साते हयनी ,उ म्हारो बिरोधी ; अने जो म्हारा साते नी भेळो करे ,उ

बेरे हे । [31]इकासरु हुं तमार से कूं ,मनख का हर पाप अने निन्दा माफ करिया जायगा
,पण पवित्तर आतमा की निन्दा नी माफ करी जायगा । [32]अने जो कोई मनख का बेटा
का बिरोध मे कोई बात केगा उको यो कसूर माफ करियो जायगा ,पण जो कोई पवित्तर
आतमा का बिरोध मे कंई केगा ,उको यो कसूर नी तो एना युग अने नी आवा वाळा युग
मे माफ करिया जायगा । [33]या तो झाड़ के अच्छो को अने फळ के बी ,या झाड़ के
निकम्मो को अने उका फळ के बी ,क्योके झाड़ अपणा फळ सेज पेचाणियो जाय हे ।
[34]हे सरप का कणाहुंण ,तम बुरा होता होया अच्छी बातहुंण कसे कई सको हो ? क्योके
जो हिरदा माय भरियो होय ,उज मुण्डापे आय हे । [35]भलो मनख अपणा भला भन्डार से
भली बातहुंण हेड़े हे ; अने बुरो मनख अपणा बुरा भन्डार से बुरीबाहुंण हेड़े हे । [36]हुं तमार
से कूं ,जो बी बुरी बात मनख केगा ,न्याव का दन वी उको लेखो देगा । [37]क्योके तु
अपणा सबदहुंण से निरदोस अने अपणा सबदहुंण सेज दोसी ठेराड़ियो जायगा । [38]तो
थोड़ाक सासतरी अने फरीसीहुंण ने उकासे क्यो,"गरु ,हम थारसे कोई सेणानी देखवा
चावां ।" [39]पण उने ज्वाब द्यो,"या बुरी अने ब्योबिचारिणी पीड़ी सेनाणी देखवा कि
इच्छामे रे, फेर बी योना नबी की सेनाणी का अलावा कोई सेनाणी नी दी जायगा ,
[40]क्योके जसो योना तीन दन अने तीन रात बड़ी मच्छी का पेट माय रियो,उनी तरां
मनख को बेटो बी तीन दन अने तीन रात धरती का गरभ माय रेगा । [41]न्याव का दन
नीनवा का लोग इनी पीड़ी का लोगहुंण का साते उठ्यायगा अने उणके दोसी ठेरायगा,
क्योके उणने योना को परचार सुणिके पस्तावो करियो ;अने देखो यां उ हे जो योना से बी
बड़िके हे । [42]न्याव का दन दक्खण की राणी इनी पीड़ी का लोगहुंण का साते उठ्यायगा
अने उणके दोसी ठेरायगा, क्योके वा सुलेमान को ज्ञान सुणवा सरु धरती का कनारा से
अई । देखो यां उ हे जो सुलेमान से बी बड़िके हे । [43]जदे बुरी आतमा कोई मनख माय से
हिटे , तो अराम ढुडवा सरु सुकी जगा पे भटक्या-फिरे , पण नी पाय । [44]तो वा के ,'जेना
घर से हुं अई थी उनाज घरे पाछी चली जउंवा ,'अने जदे वा पाछी आय तो उके रितो,
संजवारा से सोरियो ,अने सज्यो-सजायो पाय । [45]तो वा जईके अपणा से जादा बुरी
आतमाहुंण के लियाय अने वी घुसीके वां रेवा लागे; अने उना मनख को पाछलियो हाल
पेलां से बी बुरो हुई जाय । इनी पीड़ी का लोगहुंण का साते बी असोज होयगा ।" [46]जदे उ
भीड़ से बात-चित करिरियो थो ,तो देखो, उकी मेतारी अने उका भई बायरे उब्या था अने
उकासे बात करणो चाता था । [47]अने कोईने इसु से क्यो," देखतो ,थारी मेतारी अने थारा
भई बायरे उब्या अने थार से बात-चित करणो चावे ।" [48]पण उना केवा वाळा के ज्वाब

देतो होयो उने क्यो," कुंण म्हारी मेतारी अने कुंण म्हारा भई ?" [49]अने अपणा चेलाहुंण
आड़ी हात बड़ईके उने क्यो ,"देखो ,म्हारी मेतारी अने म्हारा भई ! [50]क्योके जो कोई
म्हारा पिता की जो सरग माय हे मरजी पुरण करे ,उज म्हारो भई ,म्हारी बेन अने म्हारी
मेतारी हे । "

13 [1]उना दन इसु घर से बायरे हिटीके सरवर का कराड़ा जई बेठ्यो । [2]अने
उका एरे-मेरे एक बड़ी भीड़ भेळी होई , तो उ नाव पे चड़ीके बेठिग्यो अने भीड़
कराड़ा पेज उबी री । [3]उने या केता होया उणकासे मिसाळ माय नरी बातहुंण
करी ;" देखो, एक बोणे वाळो बीज बोवा हिट्यो । [4]बोता बखत ' थोड़ाक बीज मारग का
मेरे पड़िया अने चिरकलीहुंण ने अईके उणके चुगिल्या । [5]थोड़ाक भाटाळी जमीन पे
पड़िया जां उणके जादा गारो नी मिळ्यो ;अने उन्डो गारो नी मिळवा की वजा से वी झट
उग्याया । [6]पण सूरज उगवा पे वी झुलसई ग्या अने जड़ नी पकड़वा की वजा सुखई ग्या
। [7]अने दुसरा बीज कांटाळी झांडीहुंण माय पड़िया अने झांडीहुंण ने बड़िके उनके दाबी
लाख्या । [8]पण थोड़ाक बीज अच्छी जमीन पे पड़िया अने फळिया ,कोई सो गुणा ,कोई
साट गुणा ,अने कोई तीस गुणा । [9]जिका कने कान हे उ सुणिले ।" [10]चेलाहुंण ने अइके
उकासे क्यो,"तु कायसरु उणसे मिसालहुंण माय बात करे ?" [11]उने उणके ज्वाब
द्यो,"तमारे यो दयो ग्यो के सरग का राज का भेदहुंण के जाणों ,पण उणके नी । [12]क्योके
जिका कने हे उके हजु बी द्यो जायगा ,अने उका कने नरोगंज हुई जायगा ;पण जिका
कने हयनी ,उकासे उ बी जो उका कने हे लई लियो जायगा । [13]इकासरु हुं उणकासे
मिसालहुंण माय बात करुं, क्योके वी देखता होया बी नी देखी सके अने सुनता होया बी
नी सुणी सके ,अने नीज वी समझे हे । [14]अने उणका बारामें यसायाह की या अगमबाणी
पुरण होती जईरी हे याने,' तम सुणता तो रोगा पण समझोगा हयनी; अने देखता तो
रोगा, पण तमारे सूजेगा नी ; [15]क्योके इनी जात को हिरदो जाड़ो हुईग्यो,अने अपणा
कानहुंण से लोग मुस्किल से सुणे, अने उणने आँखहुंण मिची लाखी कंई असो नी होय
के वी अपणी आँखहुंण से देखे अने कानहुंण से सुणे ,अने हिरदा से समझीले अने
बदलाव अई जाय ,अने हुं उणके अच्छो करुं ।' [16]पण धन हे तमारी आँखहुंण क्योके वी
देखे,अने तमारा कानहुंण के वी सुणे । [17]क्योके हुं तमार से साँची कूं के नरा नबीहुंण अने
धरमीमनखहुंण ने चायो के जो तम देखिरिया हो उके देखे,पण नी देख्यो ;अने जो तम

सुणिरिया हो सुने पण नी सुण्यो । [18]अबे बोणे वाळा की मिसाल के (को अरथ) सुणो :
[19]जदे कोइ मनख राज को बचण सुणाय अने उके समझे हयनी तो उ सेतान अईके ,जो
कंई उका हिरदा माय बोयो ग्यो थो,छुड़ई लई जाय । या मारग का कनारा की वा जमीन
जिपे बीज बोयो ग्यो थो । [20]अने भाटाळी जमीन जिकापे बीज बोयो ग्यो थो ,यो उ
मनख जो बचन सुणे अने झट खुसीसे मानी ले , [21]फेर बी अपणा माय जड़ नी राखे
इकासरु थोड़ाक बखत को रे,अने जदे बचण का वजा से संकट ने सतावड़ो आवे तो उ
झट ठोकर खावे हे । [22]अने कांटाळी झान्डी माय बोयो ग्यो , उ मनख जो बचन सुणे अने
जगत की चिनता अने धन को धोको बचण के दाबी लाखे अने उ बिना फळ को हुई जाय
। [23]अच्छी जमीन माय बोयो ग्यो ,उ मनख जो बचन सुणिके अने समझिके सईमें फळ
लाय , कोई सो गुणो, कोई साट गुणो, कोई तीस गुणो ।" [24]उने एक हजु मिसाल दई क्यो
,"सरग का राज को मिलाण उना मनख से करियो जई सके जिने अपणा खेत माय
अच्छो बीज बोयो । [25]पण जदे लोग सोईरिया था,तो उको दुस्मन आयो अने गँउ का
माय माळबीज बोईके चल्यो ग्यो । [26]पण जदे बीज माय अंकुरिया फुटिया अने फेर उंबी
अई तो माळघास बी नजर आयो । [27]तो नोकरहुंण ने अईके मालेख से क्यो,' हे मालेख
,कंई तने अपणी जमीन माय अच्छो बीज नी बोयो थो ? फेर उमें माळघास कय्यांड़ी से
अई ?' [28]अने उने उणकासे क्यो ,'यो कोई दुस्मन को काम हे !'नोकरहुंण ने उकासे
क्यो,'कंई तु चावे के हम जईके उणके भेळा करि ला ? ' [29]पण उने क्यो ,' नी, असो नी
होय के माळघांस भेळा करता बखत कंई तम उका साते गँउ बी नी उखाड़ी लाखो ।
[30]फसल काटवा तोड़ी दोई के एक साते बड़वा दो ,अने फसल काटवा का बखत हुं काटवा
वाळाहुंण से कूंवा ,"पेंला माळघास भेळो करिके बाळवा सरु भारा बान्दी लो ,पण गँउ के
म्हारा खळा माय भेळा करो" ।'" [31]उने एक हजु मिसाल दई उणकासे क्यो,"सरग को
राज रंई का दाणा सरिको हे जिके एक मनख ने लईके अपणा खेत माय बोई द्यो । [32]यो
दुसरा सगळा दाणाहुंण से नानो होय ,पण पुरो बड़िके बाग का सगळा रोपाहुंण से मोटो
हुई जाय हे अने असो झाड़ बणी जाय के अस्मान का पखेरु अईके उकी डाळहुंण पे बसेरो
करे ।" [33]उने एक हजु मिसाल उणकासे कई :" सरग को राज खमीर सरिको हे जिके एक
बंइरा तीन पसेरी आटा माय तत्तक मिळाती री जत्तक आटो खमीर नी बणिग्यो ।" [34]इसु
ने इ सगळी बातहुंण भीड़ से मिसाल माय कई,अने उ मिसाल का अलावा उनसे कंई नी
केतो थो । [35]जिकासे के नबी से जो बचण क्यो ग्यो थो उ पुरण होय : " हुं मिसाल माय
बोलवा सरु अपणो मुन्डो खोलुवां । हुं उणी बातहुंण के कूंवां जो जगत का बणता बखत
से गुपत थी ।" [36]फेर उ भीड़ के छोड़िके घरे आयो । तो उका चेला उका कने अईके केवा

लाग्या ," खेत का माळघास की मिसाल हमारे समझाड़ ।" [37] उने ज्वाब द्यो ," जो अच्छो
बीज बोय उ मनख को बेटो , [38] खेत तो जगत हे । अच्छा बीज राज की सन्तान । अने
माळ बीज सेतान की सन्तान, [39] अने दुस्मन जिने उणके बोया उ सेतान हे । फसल
काटणो इना युग को अन्त अने फसल काटवा वाळा सरगदुत हे । [40] जस्तरां माळघास
भेळा करिके लाय माय बाळी लाखे उनीज तरां युग का आखिर माय बी होयगा ।
[41] मनख को बेटो अपणा सरगदुत के मोकलेगा जो उका राज माय से सगळी ठोकर की
वजा ने बुरा काम करवावाळाहुंण के भेळा करेगा । [42] अने उणके लाय की भट्टी माय
लाखेगा । वां रोणो अने दांत पिसणो होयगा । [43] जदे धरमी अपणा पिता का राज माय
सुरज सरिका चलकेगा । जिका कान होय उ कान धरे । [44] "सरग को राज खेत माय
छिप्या होया धन सरिको हे,जिके कोई मनख ने पायो ने छिपई लाख्यो ,अने उकासरु
खुस हुई के उने अपणो सगळो कंई बेची लाख्यो अने उना खेत के मोल लई लियो ।
[45] "फेर सरग को राज साँचा मोतीहुंण के सोदवा वाळा एक ब्योपारी सरिको हे । [46] जदे
उके एक अनमोल मोती मिळ्यो तो उने जईके अपणो सगळो कंई बेची लाख्यो अने उना
मोती मोल लई लियो । [47] फेर सरग को राज उना बड़ा जाळ सरिको समन्दर माय
लाख्यो जाय अने नरी तरां की मच्छीहुंण घेरी लाय । [48] अने जदे जाळ भरई ग्यो तो लोग
उके कराड़ा पे खेंची लाया अने उणने बेठिके अच्छी मच्छीहुंण के तो टोपलीहुंण माय
भेळी करी पण खराब के फेंकी लाखी । [49] इना युग का आखर माय असोज होयगा ।
सरगदुत अईके बुराहुंण के धरमीहुंण से इकाड़ी करेगा ,

[50] अने उणके लाय का भट्टा माय लाखेगा जां रोणो अने दांत पीसणो होयगा ।

[51] "कंई तमारी समझ माय इ सगळी बातहुंण अई ग्यी ?" उणने उके ज्वाब द्यो ,"हां ।"
[52] अने उणने उकासे क्यो ,"इकासरु हरेक सासतरी जो सरग का राज की सिक्छा पई
चुक्यो ,उना गृहस्त सरिको जो अपणा भण्डारघर से नवी ने जूनी चीज हेड़े हे ।" [53] अने
असो होयो के जदे इसु इ सगळी मिसाल दई चुक्यो तो वां से चल्यो ग्यो । [54] उ अपणा
नगर माय आईके लोगहुंण के उणका पराथनाघर माय परबचण देवा लाग्यो ,अने वी
चकित हुई के केवा लाग्या ,"इना मनख के असो ज्ञान अने असी अचरजभरी सक्ती कां से
पई ? [55] कंई यो सुतार को बेटो हयनी ? कंई इकी मेतारी को नाम मरियम अने इका
भईहुंण को नाम याकुब ,युसफ,समोन अने यहुदा हयनी ? [56] अने कंई इकी सगळी
बेनहुंण हमारा माय नी रे ? तो इना मनख के यो सगळो कां से मिळ्यो ?" [57] अने उकी
वजा से लोगहुंण के ठोकर लागी ,पण इसु ने उणकासे क्यो," अपणा नगर अने घरीज

माय नबी को मानपाड़े हे ।" [58]अने लोगहुंण का अबिसास की वजा उने वां सामर्त को
जादा काम नी करियो ।

14 [1]उन बखत देस का चोथा हिस्सा का राजा हेरोदेस ने इसु कि चरचा सुणी
, [2]अने अपणा दासहुंण से क्यो ,"यो तो योहन बप्तिस्मो देवा वाळो हे । यो
मरिया माय से जी उठ्यो हे ,इकासरु इ ताकतहुंण उका माय काम करिरी हे
।" [3]क्योके हेरोदेस ने योहन के बन्धवई लाख्यो थो । उने अपणी घराळी हेरोदियास की
वजा उके जेलखाणा माय लाख्यो थो । [4]क्योके योहन उकासे क्या करतो थो के उके
राखणो थारा सरु ठीक हयनी , [5]अने जदकि उ उके मारी ळाखणो चातो थो , फेर बी
लोगहुंण से डरतो थो क्योके वी उके नबी मानता था । [6]पण जदे हेरोदेस को जनम दन
आयो तो हेरोदियास की छोरी (राजकुमारी) उतसव माय नाची के हेरोदस के खुस करी
द्यो । [7]इ पे सोगन खईके उने वर दयो के जो कंई तू मांगे, हूं दुवां । [8]अने मेतारी का
उकसाणे पे उने क्यो,"एक थाळी माय योहन बप्तिस्मो देवा वाळा को माथो म्हारे यांज दे
।" [9]जदकि उके दु:ख होयो ,फेर बी अपणी सोगन अने जिमवा बेठिया मेमानहुंण की
वजा से ,राजा ने हुकम द्यो के द्यो जावे । [10]उने कोइंके भेजिके जेलखाणा माय योहन को
माथो कटवई लाख्यो । [11]अने उको माथो परात माय लायो ग्यो अने छोरी के दई द्यो
जिके वा अपणी मेतारी कने लई ग्यी । [12]फेर योहन का चेला अईके लोथ के लई ग्या
अने उणने उके गाड़ी द्यो । पाछा जईके उणने इसु के समिचार दयो । [13]जदे इसु ने यो
सुण्यो ,तो उ वां से नाव पे एखलो चड़ीके कसी बिराण जगा आड़ी चल्यो ग्यो । या
सुणिके भीड़ का लोग नगर-नगर से पगे पग उका पाछे चली पड़िया । [14]जदे उ नाव से
उतरियो तो उने एक घणी बड़ी भीड़ देखी अने लोगहुंण पे तरस आयो अने उणका
बेमारहुंण के अच्छा करिया । [15]जदे सांझ होई तो उका चेला कने अईके केवा लाग्या ,"या
सुनी जगा हे अने दन अस्तिग्यो; इकासरु भीड़ के बिदा कर के लोग गाम माय जई के
अपणा सरु भोजण मोल लई ले ।" [16]पण इसु ने उणकासे क्यो ,"उणके जावा की जरुवत
हयनी :तमीज उणके खावा सरु दो ।" [17]उणने उकासे क्यो," हमारा कने सिरप पाँच रोटा
(मालवी में रोटा पुर्लिंग है) अने दो मच्छीहुंण हे ।" [18]उने क्यो ,"उणके म्हारा कने
लियाव ।" [19]तो लोगहुंण के घास पे बेठाड़िके उने पाँच रोटा अने दो मच्छीहुंण के लई
अने सरग आड़ी देखिके आसिस मांगी अने रोटा का बटका करि-करिके चेलाहुंण के दई
अने चेलाहुंण ने लोगहुंण के बांटी । [20]सगळा खई के धापी ग्या । तब (फेर बी) उणने
बच्या होया कोळियाहुंण से भरी बारा टोपलिहुंण उठाड़ी । [21]अने खावा वाळाहुंण, बंईरां ने

बाळकहुंण के छोड़िके आदमीहुंण की गिणती करीब पाँच हज्जार थी । [22]तो उने झट
अपणा चेलाहुंण के नाव पे चड़वा सरु मजबुर करिया के वी उकासे पेंला उना पार जाय,
जदकी उ खुदज भीड़ के बिदा करवा लागो । [23]भीड़ के बिदा करवा का बाद उ परबत पे
एखलो पराथना करवा सरु चल्यो ग्यो । जदे सांझ होई तो उ वां एखलो थो । [24]पण नाव
कराड़ा से थोड़क कोस दूर लेर माय झकोलिया खईरी थी ,क्योके बायरो सामे को थो ।
[25]अने उ रात का चोथा पेर (परोड़ा माय) सरवर पे चलतो होयो उ उणका कने आयो ।
[26]जदे चेलाहुंण ने उके सरवर पे चलतो होयो देख्यो तो वी घबरई के केवा लाग्या ,"यो तो
कोई भुत हे ! " [27]पण इसु ने झट उनकासे बात करी अने क्यो, " हिम्मत राखो ! हुं हे ।
डरो मति !" [28]तो पतरस ने उका से क्यो ,"परभु अगर तुज हे तो म्हारे पाणी पे चलिके
थारा कने आवा को हुकम दे ।" [29]उने क्यो," चल्यो आ !" अने पतरस नाव से उतरिके
पाणी पे चलतो होयो इसु आड़ी बड़ियो । [30]पण बायरा के दखिके उ डरिग्यो ,अने डुबवा
लाग्यो तो चिल्लायो," परभु म्हारे बचाड़ !" [31]इसु ने झट अपणो हात बड़ईके उके थामी
लियो अने क्यो,"हे कमबिसासी ,तने सक कायसरु करियो?" [32]अने जदे वी नाव पे
चड़िग्या तो बायरो थमिग्यो । [33]अने जो लोग नाव माय था उणने उके परणाम करियो
अने क्यो,"तू निस्चितज परमेसर को बेटो हे !" [34]वी पेलां पार हुईके गन्नेसरत पोंच्या ,
[35]वां का लोगहुंण ने जदे उके पिचाण्यो तो उणने एरे-मरे का इलाका माय समिचार
मोकलिया, अने लोग बेमारहुंण के उका कने लाया । [36]वी उकासे बिनती करवा लाग्या के
उ उणके लतरा को कोर केज छईलेणे दे अने जितरा ने छया ,वी अच्छा हुईग्या ।

15 [1]यरुसलेम से थोड़ाक फरीसी अने सासतरी इसु कने अईके केवा लाग्या ,
[2]"थारा चेलाहुंण पुरखाहुंण की रित के कायसरु नी माने ? वी तो रोटा खाता
बखत हात नी धोय ।" [3]उने ज्वाब द्यो," अपणी रीत सरु तम खुद परमेसर का
हुकम को उलांगो कायसरु करो ? [4]क्योके परमेसर ने क्यो,'अपणा पिता अने अपणी
मेतारी मान राखो ,'अने जो अपणा पिता अने मेतारी के बुरो के उ मारी लाख्यो जाय । '
[5]पण तम को हो के अगर कोई अपणा पिता ने मेतारी से के,तमारे 'म्हारसे जो बी फायदो
पोंची सकतो थो ,उ परमेसर के दई चुक्या , [6]'तो उके अपणा पिता ने अपणी मेतारी को
मान करवा की जरुवत हयनी,अने अस्तरां तमने अपणी रीत सरु परमेसर का बचण के
बेकार करि लाख्यो । [7]हे ढोंगीहुंणो ! यसायाह ने तमारा बारामें या अगमबाणी ठीकज

करी : [8]इ लोग होंठहुंण से तो म्हारो मान करे ,पण इणका हिरदा म्हार से दूर हे । [9]इ
बेकार म्हारी उपासणा करे अने मनखहुंण कि सिक्छाहुंण के धरम का नेम करिके
सिखाड़े हे' ।" [10]उने भीड़ के अपणा कने बुलईके उणकासे क्यो,"सुणो अने समझिलो:
[11]जो मुन्डा माय जाय उ मनख के खराब नी करे , पण जो मुन्डा से हिटे,उज मनख के
खराब करे ।" [12]तो चेलाहुंण ने अईके उकासे क्यो ,"कंई तू जाणे के इनी बात के सुणिके
फरीसीहुंण के ठोकर लागी ? " [13]पण उने ज्वाब द्यो ,"हरेक रोपो जिके म्हारा पिता ने नी
रोप्यो, उखाड़ियो जायगा । [14]उणके रेवा दो ;वी आंधा मारग देखवा वाळा हे अने आंधो
अगर आंधा के मारग बताड़े तो दोइज खाड़ा माय पड़ेगा ।" [15]पतरस ने क्यो," या
मिसाल हमारे समझाड़ी दे ।" [16]उने क्यो,"कंई तम लोग बी अबी तोड़ी नी समझिया ?
[17]कंई तम नी जाणो के जो कंई मुन्डा माय जाय ,उ पेट माय जइके मळरस्ता से हिटी
जाय ? [18]पण जो मुन्डा से बायरे आवे ,उ हिरदा से हिटे अने उज मनख के खराब करे ।
[19]क्योके हिरदा सेज बुरा-बुरा बिचार ,हत्याहुंण ,परईबंइरासातेयोनाचार,ब्योभिबिचार
,चोरिहुंण ,झुंटी गवई अने निन्दा हिटे हे । [20]ईज बातहुंण हे जो मनख के खराब करे
,पण बिना हात धोय जिमणो मनख के खराब नी करे ।" [21]इसु वां से हिटीके सुर अने
सेदा का इलाका माय चल्यो ग्यो । [22]अने देखो ,इलाका की एक कनानी बंइरा अई अने
हेला पाड़िके केवा लागी, "हे परभु दाउद की सन्तान म्हार पे दया करजे । म्हारी नानी
बुरीतरां से बुरी आतमा से भरी हे ।" [23]पण उने उके कंई ज्वाब नी दयो । चेला उका कने
अईके केवा लाग्या ,इके मोकली दे क्योके या चिल्लाती होय हमारा पाछे पड़ी हे ।" [24]पण
उने उणकासे क्यो ," हुं सिरप इसराइल का घराणा की भटकिहोई गाडरहुंण कने
मोकलियो ग्यो हुं (याने इसराइल का भटकिया लोग) ।" [25]पण वा अई अने परणाम
करिके उकासे केवा लागी ," परभु म्हारी मदद कर ।" [26]उने उकासे क्यो,"बाळकहुंण का
रोटा लईके कुतराहुंण का अगड़े लाखणो अचछो हयनी ।" [27]इ पे (उनी) बंइरा ने क्यो ,"हाँ
परभु ,पण कुतरा बी तो मालेख की थाळी (मेज का चलन नही है) को बच्यो चूरो खाय हे
।" [28]तो इसु ने क्यो ,"हे नारी ,थारो बिसास बड़ो हे । जसो तू चावे वसोज थारा सरु होय
।" उकी नानी उनीज घड़ी अच्छी हुइग्यी । [29]वां से चलिके इसु गलील का कराड़े ग्यो अने
वां परबत पे चड़िके बेठिग्यो । [30]अने घणी बड़ी भीड़ उका कने अई अने वी अपणा साते
पांगळा ,लुला ,आन्धा, गूंगा अने नरा दुसरा लोगहुंण के लईके आया अने उणके उका
चरणहुंण कने लियाया (या चरणहुंण माय लाखी दया) अने उने उणके अच्छा करिया ।
[31]इकासरु जदे भीड़ ने देख्यो के गूंगा बोले ,लुला अच्छा होय,पांगळा चले अने आंधा देखे

हे तो लोग अचम्भो करता होया अने उणने इसराइल का परमेसर कि म्हेमा करी । [32]इसु
ने अपणा चेलाहुंण के कने बुलाड़ीके क्यो, म्हारे भीड़ पे तरस आय हे क्योके इ लोग तीन
दन से म्हारा साते हे अने इणका कने खावा सरु कंईज नी हे । हुं इणके भुका नी
मोकळणो चउं , कंई असो नी होय के वी मारग मेज गस खई जाय ।" [33]चेलाहुंण ने
उकासे क्यो ,"हम इनी सुनी जगा माय असी बड़ी भीड़ खवाड़वा सरु इतरा जादा रोटा कां
से पांवांगा ?" [34]इसु ने उणकासे क्यो ,तमारा कने कितरा रोटाहुंण हे ?"उणने क्यो
,"सात अने जरासी मच्छीहुंण बी ।" [35]तो उने भीड़ के जमीन पे बेठवा को हुकम द्यो ।
[36]फेर उने सात रोटाहुंण अने मच्छीहुंण के लई धनबाद दी के उणके तोड़िया अने
चेलाहुंण के देणो सुरु करियो ,अने चलाहुंण ने भीड़ के । [37]वी सगळा खईके धापिग्या
अने उणने बच्या होया कोळियाहुंण से भरिया सात टोपला उठाड़िया । [38]जितरा ने
जिमिया उमें बंइरा अने बाळक का अलावा चार हज्जार आदमी था । [39]अबे भीड़ के बिदा
करिके उ नाव पे चड़िग्यो अने मगदन का इलाका माय आयो ।

16 [1]फरीसिहुंण अने सदुकिहुंण ने कने अईके उके परखवा सरु उकासे
पुच्छ्यो,"हमारे अस्मान से कंई सेनाणी बताड़ ।" [2]पण उने ज्वाब द्यो ,"जदे
साँझ होय तो तम को हो,'मोसम अच्छो रेगा ,क्योके अस्मान लाल हे ,' [3]अने
सवेरा ,'के आज तोफान आयगा , क्योके आज अस्मान लाल अने डरावणो हे ।'तम
अस्मान का लच्छहुंण के पेचाणणो तो जाणो हो,पण बखतहुंण की सेनाणी के नी पेचाणो
? [4]बुरा अने ब्योबिचारिणी पीड़ी सेनाणी ढुडे हे, पण योना की सेनाणी का अलावा इके
दुसरी कोई सेनाणी नी दई जायगा ।" तो वी उके छोड़िके चल्या ग्या । [5]फेर चेला उना
पार पोंच्या, पण वी रोटा लेणो भुलिग्या था । [6]इसु ने उणकासे क्यो,"देखोतो फरीसिहुंण
अने सदुकिहुंण का खमीर से होसियार रिजो ।" [7]वी माय-माय बात-चित करता होया
केवा लाग्या ,"उ इकासरु कइरियो क्योके हम रोटा नी लाया ।" [8]पण इसु ने यो जाणता
होया क्यो," हे कमबिसासीहुंण ,तम कायसरु माय-माय बिवाद करिरिया हो के हमारा
कने रोटा हयनी ? [9]कंई तम अबे बी नी समझिया या रियाद करता के जदे पाँच हज्जार
लोगहुंण सरु पाँच रोटा अने दो मच्छी थी तो तमने कितरा टोपला उठाया था ? [10]अने
चार हज्जार सरु सात रोटा था तो तमने कितरा टोपला उठाड़िया ? [11]तम कायलेणे नी
समझो ,के म्हने तमार से रोटा का बारामें नी क्यो थो पण यो के तम फरीसिहुंण अने

सदुकिहुंण का खमीर से होसियार रिजो ?" [12]तो उणकी समझ माय आयो के उने रोटा
का खमीर का बारामें नी, पण फरीसिहुंण अने सदुकिहुंण की सिक्छा से होसियार रेवा की
क्यो थो । [13]जदे इसु केसरिया फिलिप्पी का इलाका माय आयो तो अपणा चेलाहुंण से
पुछवा लाग्यो: मनख को बेटो कुंण हे ? लोग कंई के हे ?" [14]उणने क्यो ,"कोंई तो योहन
बप्तिस्मा देवा वाळो के हे,अने कोंई एलियो अने दुसरा यरमिया या नबीहुंण माय से कोंई
एक ।" [15]उने उणकासे क्यो ,"पण तम कंई को हो ? हुं कुंण हुं ?" [16]समोन पतरस ने
ज्वाब द्यो ," तू जिवता परमेसर को बेटो मसीह हे ।" [17]इसु ने उकासे क्यो ,"हे सिमोन
,योना का बेटा ,तु धन हे ,क्योके मांस अने लोई ने इके थारपे नी परगटियो,पण म्हारा
पिता ने जो सरग माय हे । [18]हुं थारसे या बी कूं के तु पतरस हे अने इनी सिल्ला पे हुं
अपणी कलिसिया बंणउवां ,अने अधोलोक का फाटक उ पे हावी नी होयगा । [19]हुं थारे
सरगराज की अने धरती की कुंचीहुंण दुंवां,अने जो कंई तु धरती पे बांदेगा उ सरग माय
बंदेगा, अने जो कंई तु धरती पे खोलेगा उ सरग माय खुलेगा ।" [20]तो उने चेलाहुंण के
चितावणी दई के वी कोंई से नी के, के हुं मसीह हुं । [21]उना बकत से इसु मसीह अपणा
चेलाहुंण के बताड़वा लागो के जरुरी हे के हुं यरुसलेम आड़ी जउं अने सियाणाहुंण
,मुखपुरोहितहुंण अने सासतरीहुंण से घणों दु:ख भोगुं अने मारिलाख्यो जउं अने तिसरा
दन जिवाड़्यो जउं । [22]इ पे पतरस उके इकाड़ी लइग्यो अने या कईके डांटवा लाग्यो :" हे
परभु परमेसर नी करे ! थारपे असो कदी नी होणे पाय !" [23]तो उने पलटी के पतरस से
क्यो, हे सेतान ,म्हारसे परे जा ! तु म्हारा सरु ठोकर की वजा हे ,क्योके तु परमेसर की
बात पे नी ,पण मनख की बात पे हिरदो लगाड़े हे ।" [24]तो इसु ने अपणा चेलाहुंण से क्यो
,"अगर कोंई म्हारा पाछे आणो चावे ,तो अपणा खुद के नकारे अने अपणो कुरुस उठईके
म्हारा पाछे हुई जाय । [25]क्योके जो कोंई अपणो पराण बचाड़णो चावे उ उके गमायेगा
,पण जो कोंई म्हारा सरु अपणो पराण गमायेगा उ उके पायगा । [26]अगर मनख अखा
जग के पईले अने अपणो पराण खोवे तो उके कंई फायदो ? या मनख अपणा पराण का
बदले कंई देगा ? [27]क्योके मनख को बेटो अपणा सरगदुतहुंण का साते पिता की म्हेमा
माय आवा वाळो हे । जदे उ हरेक के उका कामहुंण मुजब फळ देगा । [28]हुं तमार से साँची
कूं के यां उब्या होया माय से थोड़क ,जत्तक मनख का बेटा के उका राज माय आता होया
नी देखिले ,मरेगा हयनी (मोत को सुवाद नी चाखेगा)।"

17 [1]इसु छे: दन पाछे पतरस अने याकुब अने उको भई योहन के अपणा साते
एकान्त माय एक उंचा परबत पे लई ग्यो । [2]उणका सामे उको रुप बदलियो
। अने उको मुन्डो सूरज सरिको चमकी उठ्यो ,अने उका लतरा उजाळा
सरिका धोळा हुईग्या । [3]अने देखोतो, मुसो अने एलियो उका साते बात करता होया
उणके नजर आया । [4]पतरस ने इसु से क्यो ," हे परभु ,हमारा सरु यां रेणो अच्छो हे ।
अगर थारी मरजी हो तो हुं यां तीन डेरा बणऊं , एक थारा सरु ,एक मुसा सरु अने एक
एलिया सरु ।" [5]उ बोलीज रियो थो के देखो एक धोळा बादळा ने उणके छई ल्यो अने
देखो बादळा माय से या अकासबाणी होई : "यो म्हारो परमिलो बेटो हे जिकासे हुं घणों
खुस हुं । इकी सुणो !" [6]जदे चेलाहुंण ने यो सुण्यो तो वी मुन्डा का बळ पड़िग्या अने
घणा डरिग्या । [7]इसु ने कने अईके उणके छयो अने क्यो," उठियाव ,डरो मती ।" [8]तो
उणने अदरे नजर करी अने इसु का अलावा कोईके नी देख्यो । [9]जदे वी परबत से निच्चे
उतरिरिया था, इसु ने उणके हुकम दई क्यो,"जत्तक मनख को बेटो मरिया मायसे जी नी
जाय ,इना दरसन का बारामें कोईके मती किजो ।" [10]फेर उका चेलाहुंण ने उकासे पुछ्यो,
अबे सासतरी कायसरु के, के एलिया के पेलां आणो जरुरी ?" [11]उने ज्वाब द्यो ,"एलिया
को आणो जरुरी तो हे अने उ सगळो कंई सुदारेगा । [12]पण हुं तमार से कूं ,के एलियो अई
चुक्यो अने लोगहुंण ने उके नी पिचाणियो । जो कंइ उणने चायो उका साते करियो ।
अस्तरां मनख को बेटो बी उणका साते दु:ख उठाड़ेगा ।" [13]तो वी समझिग्या के उने
हमार से योहन बप्तिस्मा देवा वाळा का बारामें क्यो थो । [14]जदे वी भीड़ का कने आया तो
एक मनख इसु कने आयो अने उका सामे गोड़ा टेकी के केवा लाग्या [15]"परभु ,म्हारा बेटा
पे दया करजे ,क्योके उके मरगी आय अने घणो बेमार रे । उ घड़ी-घड़ी लाय माय अने
पाणी माय पड़ी जाय । [16]हुं उके थारा चेलाहुंण का कने लायो थो पण वी उके अच्छो नी
करी सक्या ।" [17]इसु ने ज्वाब द्यो ," हे कमबिसासी अने खराब पीड़ी का लोगहुंण हुं
कदतक तमारा साते रुंवां ? हुं कदतक तमारी सउंवां ?उके म्हारा कने ल्याव ।" [18]इसु ने
बुरी आतमा के डांटी अने वा उमे से हिटी ग्यी - अने नानो उनीज घड़ी अच्छो हुईग्यो ।
[19]तो चेलाहुंण ने एकान्त माय अईके क्यो, "हम उके कायसरु हेड़ी नी सक्या ?" [20]उने
उनकासे क्यो,"अपणा बिसास की घटी की वजा से,क्योके हुं तमार से साँची कूं के अगर
तमारा माय रंई का दाणो इतरो बी बिसास होय तो इना बळड़ा से को ,'यां से सरकी के
वंय्याड़ी जा,'अने उ सरकी जायगा ,अने तमारा सरु कंई बी अबगो नी होयगा । [21](पण
या जात पराथना अने उपास का अलावा कसा दुसरा उपाव से नी हिटे)" [22]जदे वी गलील

माय भेळा हुइरिया था ,इसु ने उनकासे क्यो ," मनख को बेटो लोगहुंण का हाते
पकड़वाणे वाळो हे , [23]अने वी उके मारी लाखेगा ,पण तिसरा दन उ जिवाड़ियो जायगा
।" इपे वी घणा उदास होया । [24]जदे वी कफरनहुम पोंच्या ,तो मन्दर का कर वसुळवा
वाळाहुंण ने पतरस कने अईके पुच्छ्यो , "कंई थरो गरु कर नी चुकाड़े ?" [25]उने क्यो "हाँ,
चुकाड़े हे ।" जदे उ घरे आयो ,तो पेंलां उकासे पुच्छ्यो ,"सिमोन तु कंई बिचारे ? धरती
का राजो चुंगी ने कर किकासे ले ,अपणा बेटाहुंण से के परायाहुंण से ?" [26]उका या केणा
पे के ,'परायाहुंण से ,"इसु ने उकासे क्यो फेर तो बेटो कर से छूटिग्यो । [27]पण असो नी
होय के हम उका सरु ठोकर कि वजा बणा ,तु सरवर पे जईके बलियो लाख ,अने जो
मच्छी पेंला अदरे आय उके लई अने उको मुन्डो खोलवा पे थारे उकामें एक सिक्को
मिळेगा । उके हेड़िके थारा अने म्हारा सरु चुकाड़ी दे ।"

18 [1]उना बखत चेला इसु कने अईके पुछवा लाग्या ,"सरग राज माय सगळा
से मोटो कुंण ?" [2]तो उने एक बाळक के अपणा कने बुलायो अने उके अदाड़
माय उबो करिके क्यो , [3]हुं तमारे साँची कूं के जत्तक तम हिरदो नी बदळो
अने बाळक सरिका नी बणो ,सरग का राज माय जई नी पावगा । [4]जो कोई अपणा खुद
के इना बाळक सरिको भोळो बणाय उज सरग का राज माय सगळा से मोटो हे । [5]अने
जो कोई म्हारा नाम से असा एक बाळक के माने उ म्हारे माने हे । [6]पण जो कोई इना
नानाहुंण माय से जो म्हारपे बिसास राखे एक के बी ठोकर खवाड़े तो अच्छो होय के उका
गळा माय घट्टी को बजनी भाटो लटकाड़िके उके समन्दर माय डुबाड़ियो जाय ।
[7]ठोकरहुंण सरु जगत पे धिक्कार ! ठोकरहुंण को आणो तो जरुरी हे ,पण धिक्कार उना
मनख पे के जिकासे ठोकर लागे ! [8]अगर थारो हात ने थारो पग थारे ठोकर खवाड़े तो
उके काटिके फेंकि लाख ; थारा सरु लुल्लो अने पांगळो हुईके जीवन पाणो इकासे घणो
भलो हे के तु दो हात अने दो पग रेता होया नरक की लाय माय लाख्यो जाय [9]अगर
थारी आँख थारे ठोकर खवाड़े तो उके हेड़ीके फेंकी लाख ,काणो हुईके जीवन पाणो इकासे
कंईज अच्छो के तु दो आँख रेतो होयो नरक की लाय माय लाख्यो जाय । [10]देखो तम
इना छोटा माय से कोई के ओछा मति जाणजो ,क्योके हुं तमार से कूं उणका दुत म्हारा
सरग पिता को मुन्डो सदाज देखता रे हे । [11](क्योके मनख को बेटो खोया होया के
बचाड़ने आयो हे) [12]तम कंई सोचिरिया हो ? अगर कोई मनख कने सो गाडर होय ने एक
खोवई जाय तो कंई उ निन्याणु के बळडा पे छोड़िके उनी एक के सोदवा नी जावेगा जो

भटकिरी हे ? [13]अने असो होय के उ उके पईले तो हुं तमार से साँची कूं के उ उका सरु
उण निन्याणु का बजाय जो गमी नी थी घणी खुसी मनावे हे । [14]तो तमारा पिता की जो
सरग माय हे असी मरजी हयनी के इना छोटाहुंण माय से कोई एक बी नास होय ।
[15]अगर थारो भई पाप करे तो एखला माय जई के उके समझाड़ । अगर उ थारी सुणे तो
तने अपणा भई के पईलियो । [16]पण अगर उ थारी नी सुणे तो अपणा साते एक या दो
जणा हजु लइजा, जिकासे के दो या तीन गवाहुंण का मुन्डा से हरेक बात परमाणित हुई
जाय । [17]अगर उ उणकी बी नी सुणे तो मन्डळी से के । अगर उ मन्डळी की बी नी सुणे
तो उ थारा सरु गेर जात अने कर वसुलवा वाळा सरिको हुईग्यो । [18]हुं तमार से कूं , जो
कंई तम धरती पे बाँदोगा उ सरग माय बँदेगा ,अने जो कंई तम धरती पे खोलोगा, उ
सरग माय खोल्यो जायगा । [19]हुं तमार से पाछो कूं ,अगर तमारामें से दो जणा धरती पे
कसी बिणती सरु एकराय हुईजाय ,तो उ म्हारा सरग पिता आड़ी से उणका सरु पुरण हुई
जायगा । [20]क्योके जां दो ने तीन म्हारा नाम से भेळा होय हे, वां हुं उणका अदाड़ माय हुं
।" [21]तो पतरस ने अईके उकासे क्यो ,"परभु ,म्हारो भई कतरी बार म्हारा बिरोद कसुर
करतो रे के हुं उके मांफ करुं ? कंई सात बार तोड़ी ?" [22]इसु ने उकासे क्यो ,"हुं थारसे या
नी कूं के सात बार तोड़िज ,पण सात बार का सत्तर गुणा तोड़ी । [23]इकासरु सरग राज को
मिलाण कसा असा राजा से करी जई सके जेने अपणो हिसाब लेणो चायो । [24]जदे उ
हिसाब लेवा लाग्यो तो उका सामे एक मनख लायोग्यो जिकापे करोड़ो रिप्या को करजो
थो । [25]पण जदे उका कने करजो चुकावा सरु कंई नी थो तो उका मालेख ने हुकम द्यो के
उके अने उकी बंइरा के ,छोरा-छोरी ने जो कंई उका कने हे ,सगळो बेचिके करजो
चकाड़िदयो जाय । [26]इ पे सेवक उका पगेपड़िग्यो अने क्यो ,'मालेख, धीरज राख हुं
सगळो कंई चुकई दुंवा ।' [27]तो उना सेवक का मालेख ने तरस खईके उके छोड़िद्यो अने
उको करजो बी मांफ करिद्यो । [28]पण (जदे)उ सेवक बायरे हिट्यो अने उको सामो उका
साती सेवकहुंण माय एक से होयो जो उका सो रिप्या को करजदार थो । उने इके
पकड़ियो अने गळो दबाड़िके क्यो, 'म्हारो करजो चुकाड़ !' [29]इ पे उका साती सेवक पगे
पड़िके बिणती करवा लाग्यो,'धीरज राख हुं सगळो कंई चुकई दुंवा ।' [30]फेर बी उ नी
मान्यो अने उके तत्तक सरु जेळ माय लाखिदयो जत्तक के उ करजो नी चुकई लाखे ।
[31]यो देखिके उका सात का सेवक घणा दु:खी होया अने उणने जईके अपणा मालेख के
यो हाल सुणायो । [32]तो उका मालेख ने उके तेड़िके क्यो , हे दुस्ट सेवक ! इकासरु के तने
म्हारसे बिणती करी ,म्हने थारो सगळो करजो मांफ करिदियो थो । [33]तो फेर म्हने

जस्तरां थारपे द्या करी ,कंई वसेज थारे बी अपणा साती सेवक पे द्या नी करनी चईये थी
?' [34]अने उका मालेख ने गुस्सामें अईके उके दु:ख देवा वाळाहुंण का सुपरद करिद्यो के
करजो चुकाड़ने तोड़ी उणकाज हात माय रे । [35]अस्तरां अगर तमारा माय से हरेक (कोई
)अपणा भई के हिरदा से मांफ नी करे तो म्हारो सरग पिता बी तमारा साते वसोज करेगा
।"

19 [1]फरे असो होयो के जदे इसु इ बतहुंण करिचुक्यो तो गलील से बिदा हुइके
यरदन का पेलांड़ी यहुदिया का इलाका माय आयो । [2]तो एक बड़ी भीड़ उका
पाछे चली पड़ी , अने उने उणके अच्छो करियो । [3]फेर थोड़ाक फरीसीहुंण
उके अजमाणे सरु उका कने आया अने केवा लाग्या ,"कंई आदमी सरु अपणी बंइरा
(घराळी) के कसीज वजा से फारकती देणो अच्छो हे ?" [4]उने ज्वाब दयो ,"कंई तमने नी
बांच्यो के रचवा वाळा ने सुरु सेज उणके नर-नारी करिके बणाया , [5]अने क्यो ,'इनी वजा
से आदमी अपणा मां-बाप से एकाड़ी रिके अपणी घराळी से मिळ्यो रेगा अने वी दोई एक
काया रेगा ?' [6]इकासरु वी अबे दो हयनी पण एक काया हे ,जिणके परमेसर ने जोड़िया
,उणके कोई मनख छेटी नी करे ।" [7]उणने उकासे क्यो ,"तो फेर मुसा ने कायलेणे हुकम
दयो के उके फारकती दई के छोड़िदे (त्यागीदे) ?" [8]उने उणकासे क्यो ,"तमारा हिरदा का
काठापण की वजा से मुसा ने घराळी के फारकती देवा की इजाजत तमारे दई ,पण सुरु
माय असो नी थो । [9]अने हुं तमार से कूं ,के जो कोई ब्योबिचार का अलावा दुसरी कसी
वजा से अपणी घराळी के छोड़िके दुसरी से ब्याव करे ,तो उ ब्योबिचार करे हे ।"
[10]चेलाहुंण ने उकासे क्यो,"अगर आदमी को सम्बन्ध अपणी घराळी से असोज हे तो
कुंवारो रेणोज भलो । [11]पण उने क्यो ," इनी बात के सगळा नी, पण सिरप वीज धारी
सके ,जिणके यो द्यो ग्यो हे । [12]क्योके थोड़ाक हिंजड़ा हे जो मां का पेट सेज असा जन्म्या
। थोड़ाक हिंजड़ा जिणके मनखहुंण ने बंणई लाख्या ,अने थोड़ाक असा बी हे जिणने
सरग राज सरु खुद केज हिंजड़ा बंणई लाख्या हे । जो इके धारी सके ,उ धारे ।" [13]तो
थोड़ा बाळक उका कने लाया के उ उणकापे हात धरिके पराथना करे ,पण चेलाहुंण ने
उणके डांटिया । [14]तो इसु ने क्यो ," बाळकहुंण के म्हारा कने आवा दो । उणके मना
मती करो ,क्योके सरग को राज असाहुंणकोज हे ।" [15]तो उणपे हात घरवा का बाद उ वां
से चल्यो ग्यो । [16]देखो,एक धणी मनख ने उका कने अईके क्यो,"हे गरु,हुं कांको भलो
काम करुं के सदाको जीवण पउं ?" [17]उने क्यो म्हारसे भला का बारामें कायलेणे पुछे ?

सिरप एकज हे जो भलो हे अगर तु जीवण माय जाणो चावे तो हुकमहुंण को पाळण कर ।" [18]उने पुछ्यो ," कांका हुकमहुंण ?" तो इसु ने क्यो ,हत्या नी करणो ,ब्योबिचार नी करणो ,चोरी नी करणो ,झुंटी गवई नी देणो , [19]अपणा पिता अने अपणी मेतारी को मान करणो , अने अपणा पड़ोसी से अपणा सरिको परेम करणो [20]जुवान ने उकासे क्यो ," इनी सगळी के तो हुं पाळतो आयो हुं; फेर म्हारमें कंई कमकोती ?" [21]इसु ने उकासे क्यो ," अगर तु सिध्द होणो चावे तो जा, अपणो धन बेचिके गरीब-गुरबा के दईदे , थारे सरग माय धन मिळेगा । अने अईके म्हारा पछड़े चल्योचल ।" [22]पण जदे जुवान ने यो सुण्यो तो दु:खी हुईके चल्यो ग्यो ,क्योके उ घणो धणी(मालदार) थो । [23]जदे इसु ने अपणा चेलाहुंण से क्यो,"हुं तमार से साँची कूं के धणी के सरग का राज माय जाणो कितरो अबगो हे । [24]हुं तमार से फेर कूं के कसा धणी के परमेसर का राज माय जावा का बजाय ऊंट के सुई का बेज माय से हिटणो सेज हे ।" [25]जदे चेलाहुंण ने यो सुण्यो तो वी घणा चोंक्या (दंग रइग्या) अने केवा लाग्या ,तो फेर केको उध्दार हुई सके ।" [26]इसु ने उणका आड़ी देखिके क्यो ,"मनख सरु जो अबगो हे ,उ परमेसर सरु सबगो हे ।" [27]इ पे पतरस ने क्यो,"देखतो, हम तो सगळो कंई छोड़िके थारा पाछे चली पड़िया । तो हमारे कंई मिळेगा ?" [28]इसु ने उणकासे क्यो," हुं तमार से साँची कूं के तम जो म्हारा पाछे चल्या आया हो उना बखत जदे सगळो कंई पाछो नवो हुई जायगा अने मनख को बेटो अपणा म्हेमावान सिंगासण पे बिराजेगा तो तम बी बारा सिंगासण पे बिराजिके इसराइल का बारा गोत को न्याव करोगा । [29]अने हरेक जिने म्हारा नाम सरु घरहुंण ने भईहुंण ने बेनहुंण ने पिता अने मेतारी ने छोरा-छोरीहुंण ने खेतहुंण छोड़िलाख्या ,उ इकासे नरो गुणो जादा पायगा अने सदाकाल का जीवन को हाकिम होयगा । [30]पण नरा जो अगलिया हे पाछलिया होयगा,अने जो पाछलिया हे, वी अगलिया होयगा ।

20 [1]सरग को राज उना मालेख सरिको जो दन उगे इकासरु हिट्यो के मजुरियाहुंण के अपणा अंगुर का बाग माय काम करवा सरु लगाड़े । [2]उने हर मजुर के एक रुप्या हरदन ठेरईके उणके अपणा अंगुर का बाग माय मोकलिया । [3]फेर सवेरा का करीब नो बज्या जदे उ बायरे आयो तो दुसराहुंण के बजार माय फालतु उब्या देख्या , [4]अने उणसे क्यो ,'तम बी अंगुर का बगीचा माय जाव जो ठीक होयगा उज तमारे दुंवां ।'अने वी चल्या ग्या । [5]फेर बारा बज्या अने तीन बज्या का करीब उने बायरे हिटी के असोज करियो । [6]करीब पांच बज्या पाछो बायरे हिटिके उने

दुसराहुंण के वां उब्या देख्या तम यां दनभर फालतु कायसरु उब्या रिया ?' [7]उणने
उकासे क्यो ,'क्योके कोईने हमारे मजुरी पे नी लगाड़िया ।' उने क्यो ,'तम बी अंगुर का
बगीचा माय जाव ।' [8]"साँज होवा पे अंगुर का बाग का मालेख ने मुनीम के बलाड़ीके
क्यो,'मजुरियाहुंण के बुलाड़ अने पाछलिया आवा आळाहुंण से सुरु करिके अगलिया
आवा वाळाहुंण तोड़ी सगळा के मजुरी दईदे ।' [9]करीब पांच बज्या साँज बखत जो मजुरी
पे लगाड़िया था ,जदे वी आया तो उणके एक-एक रुप्यो मिळयो । [10]जदे पेंलां लगाड़िया
मजुर आया तो उणने समझियो के हमारे जादा मजुरी मिळेगा ,पण उणके बी एक-एक
रुप्योज मिळ्यो । [11]जदे उणके रुप्यो मिळ्यो तो वी या कईके मालेख पे कुड़कुड़ावा
लाग्या , [12]'इ जो पाछे आया ,इणने तो एकज घड़ी काम करियो अने तने इणके हमाराज
इतरो दई द्यो जिणने दनभर को बजन उठाड़यो अने कड़क तड़को सयो । [13]पण उने
उणका माय से एक के ज्वाब द्यो ,'दोस , हुं थारा साते कोंई अन्याव नी करिरियो हुं । कंई
तने म्हारा साते एक रुप्यो मजुरी ते नी करी थी ? [14]जो थारो हे उके लईले अने चल्यो जा
। या म्हारी मरजी के जितरो थारे दयो उतरोज इका पाछे आवा वाळा के बी दउं । [15]कंई
म्हारा सरु यो ठीक हयनी के जो म्हारो हे उकासे जो चउं उ करुं ? कंई म्हारो उदार होणो
थारी आँखहुंण माय खटके हे ?' [16]अस्तरां जो पाछलिया हे वी अगलिया होयगा । अने
जो अगलिया हे ,वी पाछलिया होयगा ।" [17]जदे इसु यरुसलेम जावा पे थो तो बारा
चेलाहुंण के एखला माय लई जईके मारग माय उणकासे केवा लाग्यो , [18]देखो, हम
यरुसलेम जईरिया हे । मनख को बेटो मुखपरोहितहुंण का हाते पकड़वायो जायगा ,अने
वी उके मोत की सजा का लायक ठेरायगा । [19]वी उके गेर यहुदीहुंण का हाते सोपेगा के
वी उको मजाक उड़ाय ,कोड़ा मारे ,उके सलीब पे चड़ाय ,अने तीसरा दन उ जिवाड़यो
जाय ।" [20]तो जब्दी का बेटाहुंण की मेतारी अपणा बेटाहुंण का साते उका कने अई अने
परणाम करिके याचना करवा लागी । [21]इसु ने उकासे क्यो," तु कंई चावे ?" वा केवा
लागी ," हुकम दे के थारा राज माय म्हारा इ दोई बेटा एक थारा सुदाड़ी (जीवणाड़ी)अने
एक थारा डाबाड़ी बेठे ।" [22]पण इसु ने ज्वाब द्यो, " तम नी जाणो के कंई मांगिरिया हो ।
कंई तम उ कटोरो पी सको जिके हुं पीवा पे हुं ?" उणने क्यो," हम पी सकांगा ।" [23]उने
उणकासे क्यो ,"म्हारो कटोरो तो तम पियोगा; पण अपणा जिवणा अने डाबाड़ी बेठाणो
म्हारा हक माय हयनी । यो तो उणका सरु हे जिणका सरु तियार क्यो ग्यो हे ।" [24]या
सुणिके दसी चेला उना दोई भईहुंण पे गुस्सा होया । [25]पण इसु ने उणके अपणा कने
तेड़िके क्यो, " तम जाणों हो के गेर यहुदिहुंण का हाकिम उणपे राज करे,अने उणका बड़ा

लोग उणपे हक जताड़े । [26]तमारा माय असो नी होय । जो कोई तमारा माय बड़ो बणनो
चावे उ तमारो सेवक बणे , [27]अने जो तमारा माय परधान होणो चावे उ तमारो सेवक
बणे - [28]जस्तरां मनख को बेटो बी अपणी सेवा-चाकरी कराणे नी पण सेवा करवा अने
नराके छुड़ावा का मोलमें अपणो पराण देवा आयो । [29]जदे वी यरीहो से हिटीके जई रिया
था तो एक घणी मोटी भीड़ उका पाछे चली पड़ी । [30]अने देखो ,बाट का मेरे बेठिया दो
आंधा या सुणिके के इसु जईरियो हे ,हेला पाड़ीके केवा लाग्या," हे दाउद की ओलाद
,हमार पे दया करजे !" [31]भीड़ का लोगहुंण ने उणके डांटीके क्यो के छानो रे,पण वी
हजुज जोर से चिल्लाड़ीके केवा लाग्या ,"हे परभु ,दाउद की सन्तान ,हमार पे दया करजे
।" [32]तो इसु ने रुकी के उणके बुलाड़िया ,अने क्यो ,तम कंई चाव के हुं तमारा सरु करुं
?" [33]उणने उकासे क्यो,"परभु, हम चावां के हमारी आँखहुंण खुलिजाय ।" [34]इसु ने तरस
खईके उणकी आँखहुंण के छेयो, अने वी झटज देखवा लाग्या अने उका पाछे चलि
पड़िया ।

21 [1]जदे वी यरुसलेम कने पोंचीके जेतुन परबत पे बेतफगे आड़ी आया ,तो
इसु ने दो चेला के मोकलिया , [2]अने उणसे क्यो,"अपणा सामे का गाम माय
जाव । वां जाताज तमारे एक गदड़ी का साते उको बचड़ो बंध्यो होयो मिळेगा
। उणके खोलिके म्हारा कने ल्याव । [3]अगर तमार से कोई कंई के तो किजो के ,'परभु के
इकी जरुवत हे ,'अने उ झट उनके भेजी देगा ।" [4]यो इकासरु होयो के जो बचन नबी से
केवायो ग्यो थो उ पुरण होय : [5]सिय्योन कि बेटी से को ,'देख,थारो राजो थारा कने
अइरियो हे ; उ नरम,अने गदड़ा पे, याने गदड़ी का बच्चा पे मने लादु का बच्चा पे बेठ्यो
हे' ।" [6]चेलाहुंण ने जईके जसो इसु ने उणके बताड़ियो थो ,वसोज करियो । [7]उणने गदड़ी
अने उका बचड़ा के लईके उणपे अपणा लतरा बिछाड़िया,अने उ बेठिग्यो(सवार हुईग्यो)।
[8]भीड़ माय से नरा ने अपणा लतरा बाट माय बिछाड़िया अने दुसराहुंण ने झाड़काहुंण से
डाळी काटिके बाट माय बिछाड़ी । [9]जो भीड़ उका अगड़े जईरी थी अने वी बी जो उका
पाछे चल्या अईरिया था हेला पाड़ी-पाड़ीके कईरिया था ,"दाउद की सन्तान के होसान्ना !
धन हे उ जो परभु का नाम से आवे हे सगळा से उंच्ची जगा माय होसान्ना !" [10]जदे
उणने यरुसलेम माय (पगधरियो)परवेस करियो तो अखा नगर माय हलचल मचीग्यी
अने सगळा केवा लाग्या ,"यो कुंण हे ?" [11]अने भीड़ का लोग कईरिया था ,"यो गलील

का नासरत को नबी इसु हे ।" [12]इसु ने मन्दर माय जईके उना सगळा के जो मन्दर माय
लेण-देण करिरिया था हेड़िलाख्या, अने रुप्या का बदळामें वां कि चलण का रुप्या देवा
वाळाहुंण की मेज अने कबुतर बेचवा वाळाहुंण की चोकीहुंण पल्टीदी । [13]अने उने
उणकासे क्यो,लिक्ख्यो हे,' म्हारो घर पराथना को घर केवायगा,पण तम उके डकेतहुंण
की खो बणाव हो ।" [14]तो आंधा अने पांगळा उका कने मन्दर माय आया अने उने उणके
अच्छा करिया । [15]पण जदे मुखपुरोहित अने सास्तरीहुंण ने उना अचम्भा का काम जो
उने करिया था देख्या अने बाळकहुंण के जो मन्दर माय यो नारो लगई रिया था,'दाउद
की सन्तान के होसान्ना , तो वी गुस्सामें अईग्या , [16]अने उणने उकासे क्यो, "कंई तु
सुणे हे के ई कंई की रिया हे ?" इसु ने उणकासे क्यो,हां,"पण कंई तमने यो कदी नी
बांच्यो: बाळकहुंण अने धाता बच्चाहुंण से तने अपणा सरु इसतुति तियार करी हे '?"
[17]तो उ उणके छोड़िके नगर का बायरे बेतनिय्या ग्यो अने वांज रुक्यो । [18]दन उगे नगर
आड़ी आता बखत उके भुक लागी । [19]तो उ बाट का मेरे एक अंजीर का झाड़ के देखिके
उका कने ग्यो ,पन उपे पत्ताहुंण का अलावा कंई नी लादो । तो उने उकासे क्यो," अबसे
थारामें कदी फळ नी लागेगा ।" अंजीर को झाड़ उनीज बखत सुकिग्यो । [20]यो देखिके
चेलाहुंण अचम्भामें पड़िग्या अने केवा लाग्या ,"अंजीर को झाड़ झट कसे सुकिग्यो ?"
[21]इसु ने उणकासे क्यो, " हुं तमार से साँची कूं के अगर तम बिसास राखो अने सक नी
करो तो नी सिरप यो करोगा जो इना अंजीर का झाड़ का साते करियो ,पण अगर तम
इना परबत से बी को,'उखड़ी जा अने समन्दर माय जई पड़,'तो यो हुई जायगा । [22]अने
जो कंई तम पराथना माय बिसास से मांगोगा उ तमारे मिळेगा ।" [23]जदे उ मन्दर माय
अइके परबचण दईरियो थो तो खास याजकहुंण अने सियाणाहुंण ने उका कने अईके
क्यो,"तु केना हक से यो काम करिरियो हे ,अने केने थारे यो हक द्यो ?" [24]पण इसु ने
उणके ज्वाब द्यो,हुं बी तमार से एक बात पुछुं । अगर तम म्हारे उको ज्वाब दोगा ,तो हुं
बी तमारे बतउंवा के हुं केका हक से यो काम करुं । [25]योहन को बप्तिस्मो के का आड़ी से
थो , सरग आड़ी से के मनख आड़ी से ?"अने वी या कईके माय-माय बिचार करवा
लाग्या ," अगर हम कां ,'सरग आड़ी से तो उ हमार से केगा ,तो फेर तमने उको बिसास
कायसरु नी करियो ?' [26]पण अगर हम कां ,'मनख आड़ी से ,'तो हमारे भीड़ को
डर,क्योके वी सगळा योहन के नबी माने हे ।" [27]तो उणने इसु के ज्वाब द्यो ,"हम नी
जांणा । तो उने बी उणकासे क्यो ,"हुं बी तमारे यो नी बतउंवा के केका हक से यो काम
करुं हे । [28]पण तम कंई सोचिरिया हो ? कोई मनख का दो बेटा था अने उने पेंला कने

जईके क्यो,'बेटा जा, आज अंगुर का बाग माय काम कर ।' [29]अने उने ज्वाब द्यो हां, हुं
जउंवा,'पण उ नी ग्या' । [30]फेर बाप ने दुसरा का कने जईके वसोज क्यो,पण उने ज्वाब
दयो,'हुं नी जउंवा ।'फेर बी उ इका पाछे पस्तायो अने ग्यो । [31]इना दोईमें से केने अपणा
बाप की मरजी पुरण करी ?" उणने क्यो ,"दुसरा ने ।" इसु ने उनकासे क्यो,"हुं तमार से
साँची कूं के तमार से पेंलां ,चुंगी लेवा वाळा अने बेस्याहुंण(बांचड़ीहुंण) परमेसर का राज
माय जायगा । [32]क्योके योहन तमारा कने धरम को मारग बताड़ने आयो अने तमने
उको बिसास नी करियो । पण चुंगी लेवावाळाहुंण अने बेस्याहुंण ने उको बिसास करियो
,पण यो देखिके बी तमारे बादमें पस्तावो नी होयो के उको बिसास करता । [33]एक हजु
मिसाल सुणो । एक मालेख थो जिने अंगुर को बाग लगाड़यो अने बागर लगाड़ी के घेरयो
। अने उका भितरे रस-कुंड खोदयो अने एक डागळो बणायो फेर उने किरसाणहुंण के
(बांटा) ठेका पे दईके जात्रा पे चल्यो ग्यो । [34]जदे फसल काटवा को बखत आयो तो उने
अपणा सेवकहुंण के किरसाणहुंण कने फसल लेवा सरु मोकलिया । [35]पण किरसाणहुंण
ने उका सेवकहुंण के पकड़िके एक के कुट्यो,दुसरा के मारी लाख्यो अने तिसरा के ढेगळा
से मारियो । [36]फेर उने सेवकहुंण को एक हजु टोळो मोकलियो जो पेंलां से घणो मोटो थो
,अने उणने उणका साते बी असोज करियो । [37]पण आखरमें उने अपणा बेटा के इनी
आसा से उणका कने मोकलियो के,वी म्हारा बेटा को मान राखेगा।, [38]पण जदे
किरसाणहुंण ने बेटा के देख्यो तो माय-माय क्यो,'यो तो वारिस हे । आव, हम इके मारी
लाखां अने इकी सगळी जायदाद छुड़ई लां ।(बिरासत पे कब्जो करि लां) [39]तो उणने उके
पकड़ियो अने अंगुर का बाग से बायरे हेड़िके मारी लाख्यो । [40]इकासरु जदे अंगुर का
बगीचा को मालेख आयगा तो उना किरसाणहुंण का साते कंई करेगा ?" [41]उणने उकासे
क्यो,"उ उना दुस्टहुंण के बुरा तरिका से नास करेगा अने अंगुर को बाग को ठेको दुसरा
किरसानहुंण के दई देगा जो सई बखत पे उके फळ दया करेगा ।" [42]इसु ने उणकासे क्यो
,'जेना एरण के राज मिस्तरीहुंण ने ठोकरई दयो थो ,उज कोणा को एरण बणिग्यो । यो
परभु आड़ी से होयो अने हमारी आँखहुंण माय म्हान हे '? [43]इका सरु हुं तमार से कूं के
परमेसर को राज तमार से लई लियो जायगा अने एक असी जात के जो उको फळ लाय
,उके दई दयो जायगा । [44]जो कोई इना एरण पे पड़ेगा उ चकणा-चूर हुई जायगा ,पण
जेना कोई पे यो एरण पड़ेगा ,उके पीसीके धुळो करी देगा ।" [45]जदे मुखपुरोहितहुंण अने
फरीसीहुंण ने उकी या मिसाळ सुणी तो वी समझिग्या के उ हमाराज बारामें कईरियो हे ।
[46]अने जदे उणने उके पकड़णो चायो तो वी भीड़ से डरिग्या ,क्योके लोग उके नबी

मानता था ।

22 [1]इसु ने पाछो उणकासे मिसाळहुंण माय क्यो, [2]" सरगराज को मिलाण
एक राजा से करी जई सके जिने अपणा बेटा का ब्याव को भोज करियो ।
[3]उने भोज माय नोत्या लोगहुंण के बुलावा सरु अपणा सेवक मोकलिया ,पण
उना लोगहुंण ने आणो नी चायो । [4]फेर उने दुसरा सेवकहुंण के या कईके मोकलिया
:पांवणाहुंण से को ,"देखो, हुं भोज तियार करी चुक्यो हुं । म्हारा बेल अने पाळिया होया
ढोर काट्य जई चुक्या हे अने सबकंई तियार हे । ब्याव-भोज माय आव" ।' [5]पण उणने
कोई ध्यान नी द्यो अने अपणा रस्ता पे चली पड़िया , एक अपणा खेत आड़ी अने दुसरा
अपणा ब्योपार आड़ी , [6]अने बाकि ने उका सेवकहुंण के पकड़ियो अने बुरो बरताव
करिके उणके मारी लाख्या । [7]तो राजा ने गुस्सा माय अईके (चड़ई करी दी) सेना
मोकली दी अने उना हत्याराहुंण के नास करिके उणको नगर बाळी लाख्यो । [8]फेर
अपणा सेवकहुंण से क्यो ,ब्याव को भोज तो तियार हे ,पण वी जो तड़िया ग्या था
लायक नी हिट्या । [9]इकासरु खास चोरायाहुंण पे जाव अने जितरा बी तमारे मिळे
,ब्याव का भोजमें तेड़ी लाव ।' [10]वी सेवक सेरी-गळीहुंण माय ग्या अने जो बी अच्छा-बुरा
मिळया ,सगळा के भेळा करिया ; अने ब्याव को घर (भोज) पांवणाहुंण से भरई ग्यो ।
[11]पण जदे भोज माय भेळा होया पांवणाहुंण के देखवा सरु आयो, तो उने वां एक मनख
के देख्यो जो ब्याव का लतरा पेरियो होयो नी थो , [12]अने उने उकासे क्यो,'दोस, तु यां
ब्याव का लतरा परिया बिना कसे अइग्यो?' अने उ कंई नी कई सक्यो । [13]तो राजा ने
अपणा सेवकहुंण से क्यो, 'उका हात अने पग बांदीके उके बायरे इन्दारा माय लाखी दो ।
वां रोणो अने दांत पिसणो होयगा ।' [14]क्योके तेड़िया होया तो नरा पण छांट्या होया
कमती हे ।" [15]तो फरीसीहुंण ने जईके माय-माय बिचारयो के कस्तरां उके उकीज
बातहुंण माय फँसाड़ां । [16]उणने अपणा चेलाहुंण के हेरोदियाहुंण का साते यो केवा
मोकलिया :हे गरु ,हम जाणां के तु साँचो हे अने परमेसर को मारग सच्चई से सिखाड़े ,
अने कोई का दबावमें नी आवे ; क्योके तु कोई की तरफदारी नी करे । [17]इकासरु हमारे
बताड़ के तु कंई सोचे :केसर के कर चुकाड़णो ठीक हे के नी ?" [18]इसु ने उणकी चालाकी
जाणीके क्यो, हे कपटियाहुंण ,म्हारे कायसरु परखीरिया हो ? [19]म्हारे उ सिक्को बताड़ो
जिकासे कर चुकायो जाय हे । तो वी उका कने एक चाँदी को सिक्को लाया । [20]उने
उणकासे क्यो ,"या छाप अने लेख केको हे ?" [21]उणने उकासे क्यो,"कैसर को ।" तो उने

उणका से क्यो," जो कैसर को हे उ कैसर के दो ,अने जो परमेसर को हे उ परमेसर के दो ।" [22]या सुणिके वी चक्करमें पड़िग्या अने उके छोड़िके चल्या ग्या । [23]उनाजदन थोड़ा सदुकी -जो के कि मरिया पाछे जी उठणो हेज नी -उका कने आया अने उसे पुछवा लाग्या , [24]"गरु ,मुसा ने क्यो थो ,अगर कोई आदमी बेओलाद मरिजाय तो उको भई उकी बंइरा से ब्याव करिके उका भई सरु ओलाद पेदा करे ।' [25]अबे हमारा यां सात भई था । पेंलो, ब्याव करिके मरिग्यो अने ओलाद नी होवा की वजासे अपणी घराळी के अपणा भई सरु छोड़िग्यो । [26]अस्तरां दुसरा अने तिसरा ने बी करियो ,अने सातवां तोड़ी योज होयो । [27]अने आखरमें वा बंइरा बी मरी ग्यी । [28]तो जी उठवा पे वा सातहुंण माय से केकी घराळी रेगा ? क्योके वा सगळा की घराळी रई चुकी थी ।" [29]पण इसु ने उके ज्वाब द्यो ,"तम भुलमाय पड़िया हो क्योके पवित्तर सासतर ने परमेसर की ताकत के नी जाणो । [30]क्योके पाछो जी उठणा पे लोग नी तो ब्याव करे अने नीज ब्यावमें द्या जाय ,पण सरग माय वी दुतहुंण सरिका होय । [31]कंई मरियाहुंण का पाछा जी उठवा का बारामें तमने यो बचण नी बांच्यो जो परमेसर ने तमार से क्यो थो : [32]हुं इबराहिम को परमेसर अने इसाक को परमेसर अने याकुब को परमेसर हुं ? उ मरियाहुंण को नी, पण जीवताहुंण को परमेसर हे ।" [33]जदे लोगहुंण ने यो सुण्यो तो वी उका परबचन से चकित रई ग्या । [34]जदे फरीसीहुंण ने यो सुण्यो के उने सदुकीहुंण को मुन्डो बंद करि दयो(की बोलती बन्द करि दी) तो वी भेळा होया । [35]अने उणका माय से एक ने जो ब्योवसतापक(नेम को जाणकार) थो,परखवा सरु उकासे सवाल करियो। [36]"हे गरु,नेम माय कांको हुकम खास हे ?" [37]उने उकासे क्यो," तु परभु अपणा परमेसर से अपणा अखा हिरदा अने अपणा अखा पराण अने अपणी अखी अकल से परेम राख । [38]योज बड़ो ने खास हुकम हे । [39]अने उकाज सरिकी दुसरी या हे :तु अपणा पड़ोसी के अपणा सरिको परेम राख ।' [40]इज दो हुकमहुंण अखा नेम अने नबीहुंण को अधार हे ।" [41]जदे फरीसी भेळा होया था ,तो इसु ने उणका से एक सवाल पुछ्यो : [42]मसीह का बारामें तम कंई सोचो हो ? उ के को बेटो हे ?"उणने उका से क्यो ,"दाउद को ।" [43]उने उणका से क्यो ,तो (फेर) दाउद आतमा माय उके ' परभु ' कायसरु के ,याने [44]'परभु ने म्हारा परभु से क्यो,म्हारा सुदाड़ी बेठ ,जत्तक के हुं थारा बेरीहुंण के थारा पग की चोकी नी बणई दुं "?' [45]अगर दाउद उके परभु के तो उ उको बेटो कसे होयो?" [46]कोई बी उके कंई ज्वाब नी दई सक्या ,अने उनादन से हजु सवाल करवा की हिम्मत नी होई ।

23 [1]तो इसु ने भीड़ से अने अपणा चेलाहुंण से क्यो , [2]"सासतरी अने फरीसी
खुद मुसा की गादी पे बेठग्या हे । [3]इकासरु जो कंई वी तमार से के उके
करजो अने मानजो ,पण उणका सरिका काम मति करजो ;क्योके वी के तो
हे पण करे हयनी । [4]वी घणा बजन के बांधीके मनखहुंण का कांधा पे लादी दे , पण खुद
उणके अपणी अंगळी से बी नी चोटणो चावे ।(टळो बी नी दे) [5]वी अपणो सगळो काम
मनखहुंण के बताड़वा सरु करे । वी अपणा तावीजहुंण के चोड़ा करे अने अपणा
लतराहुंण की झालरहुंण के लम्बी करे । [6]अने दावतहुंणमें आदर की जगा ने
पराथनाघरहुंण माय खास आसण , [7]अने बाजारहुंण माय मान सम्मान पाणो ने
लोगहुंण से 'रब्बी 'केलाणो उणके भावे । [8]पण तम 'रब्बी 'मत केवाड़जो ,क्योके तमारो
एकज गरु हे अने तम सगळा भई हो । [9]धरती पे कोई के अपणो बाप मति किजो,क्योके
तमारो एकज बाप हे ,जो सरग माय रे । [10]तम अगवो मती केवाड़जो क्योके तमारो
एकज अगवो हे याने मसीह । [11]पण जो तमारा माय सगला से मोटो हे उ तमारो सेवक
होयगा । [12]जो कोई अपणा आपके मोटो(उंच्चो) बणावेगा उ निच्चो करियो जायगा,अने
जो खुद के निच्चो(नानो) बणावेगा उ मोटो करियो जायगा । [13]हे ढोंगी सासतरी अने
फरीसीहुंण ,तमार पे धिक्कार ! क्योके तम मनखहुंण सरु सरग को राज बन्द करि
लाखो हो । तम नी तो खुद जाव हो अने नीज जावा वाळाहुंण के भितरे जावा दो हो ।
[14](हे ढोंगी सासतरी अने फरीसीहुंण ,तमार पे धिक्कार ! क्योके दिखावा सरु बड़ी-बड़ी
पराथनाहुंण करता होया बी तम रांडीहुंण का घरहुंण के गिली जाव हो ,एकासरु तमारे
घणी सजा मिळेगा ।) [15]हे ढोंगी सासतरी अने फरीसीहुंण ,तमार पे धिक्कार ! तम एक
मनख के अपणा आड़ी(मत माय लाणे सरु) मिळाने सरु धरती-असमान(जल-थल माय
फिरो) एक करी दो ,अने उ जदे अइ जावे तो उके अपणा से दुगणो पापी (नारकीय) बणई
लाखो हो । [16]"हे आंधा अगवाहुंण ,तमार पे धिक्कार! जो को हो ,अगर कोई मन्दर की
सोगन खाय ,तो कंईनी, पण मन्दर का सुन्ना की सोगन खाय तो उ बंदी जायगा ।" [17]हे
मुरख ने आंधाहुंणो, कंई जरुरी हे सुन्नो के उ मन्दर जो सुन्ना के पवित्तर करे हे ? [18]फेर
को हो, 'अगर कोई बेदी का चड़ावा की सोगन खायगा तो उ बंदी जायगा ।' [19]हे
आंधाहुंणो, कंई जरुरि हे, चड़ावो के वा बेदी जो चड़ावा का पवित्तर करे हे ? [20]इकासरु जो
सोगन खाय, उ बेदी अने उपे धरियो चड़ावो दोईज की सोगन खाय हे । [21]जो मन्दर की
सोगन खाय ,उ मन्दर ने उमें(उकामे) रेवा वाळा परमेसर की बी सोगन खाय हे, [22]अने

जो सरग की सोगन खाय, उ परमेसर का सिंगासण अने उकापे (उपे) बेठवा वाळा दोई
की सोगन खाय हे । [23] "हे ढोंगी सासतरी - फरीसीहुंण ,तमार पे धिक्कार !तम पोदिनो,
सोंप अने जीरा को दसमों हिस्सो तो दो हो,पण नेम की गेरी बातहुंण याने
न्याव,दया,अने बिसास के टाळो हो,पण होणो तो यो थो के इनी बातहुंण के करता होया
दुसरी बातहुंण के बी नी टाळता । [24] हे आंधा अगवाहुंण,तम मच्छर के तो छाणी
लाखो,पण ऊंटड़ा के गिली जाव हो ! [25] "हे ढोंगी सासतरी अने फरीसीहुंण तमार पे
धिक्कार !तम कटोरा अने परात के बायरे से तो मांजो हो,पण भितरे से वी हरतरां की
लूट अने बेकाबु से भरिया होया हे । [26] हे आंधा फरीसी ,पेंलां कटोरा अने परात के भितरे
से मांज जिकासे के वी बायरे बी साफ हुई जाय। [27] हे ढोंगी सासतरी अने फरीसीहुंण,
तमार पे धिक्कार ! तम चुना से पोती होई कबरहुंण सरिका हो जो बायरे से तो सुन्दर
नजर आय, पण भितरे मुरदा का हड़काहुंण अने सगळी सड़ांद से भरी होई हे । [28] अस्तरां
तम बी बायरे से मनखहुंण के धरमी नजर आव ,पण भितरे ढोंग अने अधरम भरियो
होयो हे । [29] "ढोंगी सासतरी अने फरीसीहुंण,तमार पे धिक्कार ! तम नबीहुंण कि
कबरहुंण तो बणाव अने धरमीहुंण की रियादगारी सजाड़ो हो , [30] अने को हो,अगर हम
अपणा पुरखाहुंण का बखत माय होता,तो नबीहुंण कि हत्यामें हिस्सो नी लेता।,
[31] निचोड़ यो के तम खुद अपणा बिरोधमें गवई दो हो, के तम नबिहुंण का हत्याराहुंण की
ओलाद हो । [32] अबे तमने अपणा पुरखाहुंण का पाप को गागर भरी लाखो । [33] हे
सरपहुंण, हे करेतहुंण का कणाहुंण, तम नरक की सजा से कसे बचोगा ? [34] इकासरु
देखो, हुं तमारा सरु नबीहुंण अने ज्ञानीहुंण अने सासतरीहुंण के मोकली रियो हुं । तम
उणका माय से थोड़ाक की हत्या करोगा अने थोड़ाक के सूली पे चड़वगा, फेर थोड़ाक के
अपणा पराथना घर माय कोड़ा लगाड़ोगा अने नगर-नगर सताड़ता फिरोगा, [35] के जितरा
धरमीहुंण को लोई धरती पे बिवाड़यो ग्यो ,उ तमारा माथे पड़े, याने धरमी हाबिल से
लिके बिरिक्याह का बेटा जकरयाह तोड़ी ,जिके तमने मन्दर अने बेदी का अदाड़में मारी
लाख्यो थो । [36] हुं तमार से साँची कूं, इ सगळी बातहुंण इनी पीड़ी का माथे पड़ेगा । [37] "हे
यरुसलेम, हे यरुसलेम ! तु नबीहुंण के मारी लाखे अने जो थारा कने मोकलिया जाय,
उणके भाटा मारिया जाय हे । म्हने कितरी बार चायो के जसे मुरगी अपणा बच्चाहुंण के
पांख तळे भेळा करे , वसोज हुं बी थारा बच्चाहुंण के भेळा करुं ,पण तमने नी चायो ।
[38] देखो, तमारो घर तमारा सरु उजाड़ छोड़ियो जाय हे । [39] क्योके हुं तमार से कूं के अब

से तम म्हारे तत्तक नी देखोगा जत्तक यो नी कोगा :'धन हे उ जो परभु का नाम से आवे हे'।"

24 [1]जदे इसु मन्दर से हिटीके बायरे जईरियो थो तो उका चेला मन्दर का भवन के दिखाड़वा उका कने आया। [2]तो उने उणकासे क्यो,"कंई तम इ सगळो नी दखिरिया ? हुं तमार से साँची कूं , यां एक एरण का अदरे दुसरो एरण बी नी रेगा जो ढळायो नी जायगा ।" [3]जदे उ जेतुन परबत पे बेठियो थो तो उका चेला एकला माय उका कने अईके केवा लाग्या, हमारे बताड़ इ बातहुंण कदे होयगा ,अने थारा आवा को ने इना युग के खतम होवा की कंई सेनाणी होयगा ?" [4]इ पे इसु ने ज्वाब दयो,"होसियार रो,कोई तमारे धोको नी दे, [5]क्योके नरा लोग म्हारा नाम से यो केता आयगा,हुं मसीह हुं ,'अने नरा के धोको देगा । [6]तम लड़ईहुंण का बारामें अने लड़ईहुंण की अफवा सुणोगा । देखो, डरजो मती क्योके इणको होणो जरुरी हे ,पण उना बखत अन्त नी होयगा । [7]क्योके जात, जात को बिरोध अने राज,राज को बिरोध हुई जायगा अने नरी जगाहुंण पे बिखो पड़ेगा अने धरती हलेगा । [8]पण इ सगळी बातहुंण तो पिड़ाहुंण की सुरुवातज होयगा । [9]तो वी तमारे कलेस देवाड़ने सरु तमारे पकड़वायगा अने मारी लाखेगा अने म्हारा नाम का वजा से अखी जातिहुंण तमार से घरणा करेगा । [10]उना दनहुंण माय नरा लोग ठोकर खायगा अने एक दुसरा से बिसासघात अने एक दुसरा से घिरणा करेगा । [11]अने नरा झुटा नबी उठ्यायगा अने नरा के भरमायगा । [12]अधरम का बड़वा की वजा नरा को परेम ठंडो पड़ि जायगा । [13]पण जो आखरी तोड़ी धीरज धरयो रेगा , उकोज उद्धार होयगा । [14]राज को यो सुसमिचार अखा जगत माय परचार करियो जायगा के सगळी जातहुंण पे गवई रे ,अने फेर अन्त अइ जायगा । [15]तो जदे तम उनी उजाड़वा वाळी धरणीत चीज के ,जेका बारामें दानियल नबी ने क्यो थो, पवित्तर जगा उबि देखो- बांचवा वाळो समझी ले - [16]तो वी जो यहुदिया माय होय,परबत पे दोड़ी जाय । [17]जो घर का छज्जा पे होय, उ घर माय कंई लेवा सरु निच्चे नी उतरे । [18]जो खेत माय होय ,उ अपणो लतरो लेवा सरु पाछे नी आवे । [19]उणका सरु धक्कार जो उनादनहुंण माय गरभ से होयगा अने जो दुध धवाड़ती होयगा ! [20]पराथना करो के तमारे स्याळा माय ने सबत का दन भागणो नी पड़े । [21]क्योके असो (भयंकर,भयानक,खतरनाक) घोर संकट होयगा जसो नी तो जगत का सुरु से अब तोड़ी होयो अने नी कदी होयगा । [22]अने अगर वी दन घटाड़िया नी जाता तो एक बी पराणी नी बचतो,पण(छांट्या) चुण्या होया की वजा वी दन घटाई दया जायगा । [23]तो फेर अगर

कोई तमार से के ,'देखो, मसीह यां हे' ने वां हे ,' तो बिसास मती करजो । [24]क्योके झुटा
मसीह अने झुटा नबी उठ्यायगा (परगटेगा) ने बड़ा-बड़ा चमत्कार अने अदभुद काम
बताड़ेगा, यां तोड़ीके अगर हुई सके तो चुण्या होया के बी भरमई(बरगलई) लाखे ।
[25]देखो,म्हने पेंलांज तमारे बताड़ी द्यो । [26]इकासरु, अगर कोई तमार से के, 'माळ माय हे,
'तो बायरे मती हिटी जावजो,या 'देखो,उ कोठड़ी माय हे तो बिसास मती करजो ।
[27]क्योके जसे बिजळी उगणुं (आड़ी) से हिटीके आथणुं (आड़ी)तोड़ी चिलके ,वसोज मनख
का बेटा को बी आणो होयगा । [28]जां लास होय, वांज चीलगरदन(गिद) भेळी होयगा ।
[29]उना दनहुंण का संकट का झट बाद सुरज इन्दारियो हुई जायगा ने चन्दरमा अपणो
उजाळो नी देगा,अने अस्मान से तारागण पड़ेगा, ने अस्मान की ताकत हलाड़ी जायगा ।
[30]तो मनख का बेटा कि सेनाणी अस्मान माय नजर आयगा, अने धरती की सगळी
जातहुंण (कळाप) रुदन करेगा, अने लोग मनख का बेटा के सक्ती ने बड़ा बैभव (का)
साते अस्मान का बादळाहुंण पे आता देखेगा । [31]अने उ तुरी की घणी अवाज का साते
अपणा सरगदुतहुंण के मोकलेगा, अने वी चारी दिसाहुंण माय अस्मान का एक कनारा
से दुसरा कनारा तोड़ी, उका चुण्या होया के भेळा करेगा । [32]अंजेर का झाड़ से या मिसाल
सिको: जदे उकी डाळ नरम हुई जाय अने उकामाय पत्ता हिटवा लागे,तो तम जाणी लो
हो के उनाळो कने हे । [33]अस्तरां जदे तम इनी बातहुंण के होता देखो तो जाणी लिजो के
उ कने हे ,बरण दरवाजा पेज हे । [34]हुं तमार से साँची कूं ,के जत्तक इ सगळी बातहुंण
पुरण नी हुई जाय इनी पीड़ी को अन्त नी होयगा । [35]अस्मान अने धरती टळी जायगा,
पण म्हारा बचण कदी नी टळेगा । [36]उना दन ने उनी घड़ी का बारामें कोई नी जाणे -
नीतो सरगदुत अने नीज बेटो, पण सिरप पिता(परमेसर)। [37]मनख का बेटा को आणो
बिल्कुल नूह का दनहुंण का सरिको होयगा । [38]क्योके जलपरलय का पेंलां का दनहुंण
माय जस्तरां नूह का झाज माय आवा दन तोड़ी लोग खाता-पीता रिया, अने उणका माय
ब्याव-सादीहुंण हुई री थी, [39]अने जत्तक जलपरलय उणके बिवाड़ी नी लईग्यो वी इके
समझिनी सक्या, उनीतरां मनक का बेटा को बी आणो होयगा । [40]उना बखत दो मनख
खेत माय होयगा ;एक लईलियो जायगा अने दुसरा के छोड़ी लाखेगा(लाख्यो जायगा) ।
[41]दो बंइरांहुंण घट्टी पीसीरी होयगा ;एक लईली जायगा अने दुसरी छोड़ी लाखेगा ।
[42]इकासरु जागता रो ,क्योके तम नी जाणो के तमारो परभु केनादन अई जायगा । [43]पण
यो पक्को(निस्चित) जाणो के अगर घर का मालेख के मालम होतो के चोर रात माय

(कदे) केनी बखत आयगा तो उ जागतो रेतो अने अपणा घर माय खाद लागवा नी देतो ।
[44]अस्तरां तम बी तियार रो । मनख को बेटो उनी घड़ी अई जायगा जदकी तम सोचोगा
बी नी । [45]"असो बिसासलायक अने अकलमन्द सेवक कुंण हे जिके उको मालेख
सेवकहुंण का अदरे हाकिम बणाय, के सई बखत पे उणके भोजण (रोटा) दे ? [46]धन हे उ
सेवक जिके मालेख अईके उके असोज करतो पावे । [47]हुं तमार से साँची कूं के उ उके
अपणी अखी धन-सम्पती पे हाकिम बणायगा । [48]पण उ बुरो सेवक अपणा हिरदा माय
के ,म्हारा मालेख के आवामें अबी नरी देर हे ,' [49]अने अपणा साती सेवकहुंण के मारवा-
कुटवा लागे अने दारुड़ियाहुंण का साते खावा-पीवा मँडी जावे , [50]तो उना सेवक को
मालेख असादन आवेगा जदे उ उका आवा की आस नी करे अने असी घड़ी आवेगा जिके
उ जाणें बी नी । [51]तो उ उके काठी सजा देगा अने ढोंगीहुंण का साते उके लाखी देगा । वां
रोणो अने दांत पिसणो होयगा ।

25 [1]तो सरग का राज को मिळान उनी दस कुंमारीहुंण से करयो जायगा जो
अपणो दियो के लईके लाड़ा से मिळवा सरु हिटी । [2]उणकामें पांच मुरख अने
पांच अकलमंद थी । [3]क्योके मुरखहुंण ने जदे दियो ल्यो तो उणने अपणा
साते तेल नी ल्यो , [4]पण अकलमंदहुंण ने अपणा दियाहुंण का साते कुप्पीहुंण माय बी
तेल ल्यो । [5]जदे लाड़ा के आवामें देरी हुईरी थी तो वी सगळी उंघवा लागी अने सोई ग्यी
। [6]पण आदी राते तेड़ो(हेलो) आयो : 'देखो, लाड़ो अईरियो हे ! उकासे मिळवा चलो !' [7]तो
वी सगळी कुमारीहुंण उठ्यई अने अपणो-अपणो दियो ठीक करवा लागी । [8]अने
मुरखहुंण ने अकलमन्द से क्यो,'हमारे बी अपणा तेल माय से थोड़ोक दो, क्योके हमारा
दिया बुजवा पे हे ।' [9]पण अकलमन्दहुंण ने ज्वाब दियो,'नी, यो हमारा सरु हे अने
तमारा सरु पुरो नी पड़े । भलो यो के तम दुकानदारहुंण कने जईके अपणा सरु मोलई लो
।' [10]जदे वी मोल लेवा सरु चली ग्यी तो लाड़ो अईग्यो , अने जो तियार थी, वी उका साते
ब्याव-भोज माय भीतरे चली ग्यी । अने किमाड़ बन्द करी लाख्यो । [11]पाछे वी दुसरी
कुमारीहुंण बी अईके केवा लागी ,'मालख, हे मालेख,हमारा सरु किमाड़ खोलिदे !' [12]पण
उने ज्वाब दयो, 'हुं तमार से साँची कूं, हुं तमारे नी जाणुं ।' [13]इकासरु जागता रो ,क्योके
तम नी तो उनादन के जाणो अने नीज उनी घड़ीके । [14]फेर,यो उना मनख सरिको हे जो
जात्रा पे जावा सरु थो अने जेने अपणा सेवकहुंण के बुलाड़ी के अपणी सम्पती उणके
समळई दी । [15]उने एक के पांच तोड़ा ,दुसरा के दो,अने तिसरा के एक ,याने हरेक के
उकी काबिलियत का मुजब दयो,अने जात्रा पे चल्यो ग्यो । [16]जिके पांच तोड़ा मिळ्या

था, उने झट जईके उकासे ब्योपार करियो अने पांच तोड़ा हजु कमाया । [17] अस्तरां जिके
दो तोड़ा मिळ्या था,उने बी दो हजु कमाया । [18] पण उ जिके एक मिल्यो थो ,उने जईके
खाड़ो खोदयो अने अपणा मालेख का तोड़ा उका माय छिपाड़ी लाख्यो । [19] नरादन पाछे
उना सेवकहुंण को मालेख आयो अने उणकासे लेखो लेवा लाग्यो । [20] तो उ जिके पांच
तोड़ा मिळया था ,उने पांच तोड़ा हजु लई के क्यो ,' मालेख,तने म्हारे पांच तोड़ा
समळाया था । देख, म्हने इणकासे पांच हजु कमाया । [21] उका मालेक ने उकासे
क्यो,'साबास ' भला अने बिसासलायक सेवक ! तु थोड़क माय बिसासलायक रियो, हुं
थारे नरी चीजहुंण को हाकिम ठेरउंवां । अपणा मालेख का आनन्द माय सामिल हुईजा
।' [22] "जिके दो तोड़ा मिळ्या था, उने अईके क्यो, 'मालेख,तने म्हारे दो तोड़ा समलाया था
। देखतो, म्हने दो हजु कमाया ।' [23] मालेख ने उकासे क्यो,'साबास'भला अने
बिसासलायक सेवक ! तु थोड़ाक माय बिसासलायक रियो,हुं थारे नरीज चीजहुंण को
हाकिम ठेरउंवां(बणउंवां) अपणा मालेख का आनन्द माय सामिल हुईजा ।' [24] "फेर उ बी
जिके एक तोड़ो मिळ्यो थो अइके केवा लाग्यो, हे 'मालेख, हुं जाणतो थो के तु निरदयी
मनख हे ; जां बोय हयनी वां काटे अने जां बेरे हयनी वां से भेळो करे । [25] तो हुं डरिग्यो
अने जईके थारा तोड़ा के म्हने जमीन माय गाड़ी लाख्यो । जो थारो हे उके लईले ।'
[26] पण उका मालेख ने उके ज्वाब दयो,' हे बुरा अने आळसी सेवक,तु यो जाणतो थो के
जां हुं नी बोउं वां से काटूं ,अने जां बीज नी बेरूं वां से भेळा करुं ; [27] जदे तो थारे चइये थो
के म्हारो तोड़ो(धन) सऊकारहुंण कने मेली देतो ,जिकासे के हुं अईके अपणो धन ब्याज
सईत उणकासे लई लेतो । [28] इकासरु इकासे उ तोड़ो बी लईलो,अने जिका कने दस हे
उके दईदो । [29] क्योके हरेक जिका कने हे उके हजु बी दयो जायगा अने उका कने नरो हुई
जायगा । पण जिका कने हयनी, उकासे उ बी लईलियो जायगा जो उका कने हे । [30] 'इना
मतकमउं सेवक के बायरे का इन्दारा माय लाखी दो, जां रोणो अने दांत पिसणो होयगा
।' [31] "पण जदे मनख को बेटो अपणी म्हेमा माय आयगा अने सगळा सरगदुत उका साते
आयगा, तो उ अपणा म्हेमावान सिंगासण पे बिराजेगा । [32] अने सगळी जातहुंण उका
सामे भेळी करी जायगा ;अने उ उनके एक-दुसरा से इकाड़ी करेगा,जसे ग्वाळो गाडर अने
बकरीहुंण के इकाड़ी राखे । [33] उ गाडरहुंण के अपणा जिवणा आड़ी ,ने (बोकड़ी) बकरिहुंण
के डाबा आड़ी करेगा । [34] तो राजो अपणा जिवणा हात वाळाहुंण से केगा ,' हे म्हारा पिता
का धन लोगहुंण, आव, उना राज का हाकिम बणो जो जगत का सुरु से तमारा सरु

तियार करयो ग्यो । [35]क्योके हुं भुको थो अने तमने म्हारे खावा सरु दयो। हुं तिरसियो
थो अने तमने म्हारे पाणी पिवाड़ियो । हुं परदेसी थो तमने म्हारे अपणा घर माय ठेरायो
। [36]हुं नांगो थो, तमने म्हारे लतरा पेराया ; बेमार थो,तमने म्हारी सुद ली; जेल माय थो,
तम म्हारसे मिळवा आया ।' [37]" तो धरमी उके ज्वाब देगा,'परभु, हमने कदे भुको देख्यो
अने जिमाड़ियो,ने तिरसियो देख्यो अने पाणी पिवाड़ियो ? [38]अने हमने कदे थारे परदेसी
देख्यो अने अपणा घर माय ठेरायो ने नांगो देख्यो अने लतरा पेराया ? [39]हमने कदे थारे
बेमार ने जेळखाना माय देख्यो अने थारसे मिळवा आया ?' [40]इ पे राजो उणके ज्वाब
देगा,'हुं तमार से साँची कूं के जो कंई तमने म्हारा इना नाना से नाना भई हुंण माय से
कसाज एक का साते करियो उ म्हारा साते करियो ।' [41]" तो उ डाबा आड़ी वाळाहुंण से
केगा, हे सापित लोगहुंण,म्हार से दुर हुईके उनी सदा की लाय माय जई पड़ो जो सेतान
ने उका दुतहुंण सरु तियार करी ग्यी हे ! [42]हुं भुको थो,तमने म्हारे खावा सरु नी दियो;
तिरसियो थो,तमने म्हारे पाणी नी पिवाड़ियो; [43]परदेसी थो, तमने म्हारे अपणा घर माय
नी ठेरायो; नांगो थो, तमने म्हारे लतरा नी पेराया; बेमार अने जेळखाना माय थो, तम
म्हारी सुद लेवा नी आया ।' [44]इ पे वी उकासे पुछेगा, 'परभु, हमने कदे थारे भुको ने
तिरसियो,ने परदेसी, ने नांगो, ने बेमार, ने जेळखाना माय देख्यो अने थारी सेवा नी करी
?' [45]तो उ उणके ज्वाब देगा,'हुं तमार से साँची कूं के जो तमने इना नाना माय से कसा
एक का साते नी करियो, उ म्हारा साते बी नी करियो ।' [46]इ लोग सदाकाळ तोड़ी सजा
भोगेगा, पण धरमी सदा का जीवन माय जायगा ।"

26 [1]असो होयो के जदे इसु इ सगळी बातहुंण करी चुक्यो, तो उने अपणा
चेलाहुंण से क्यो, [2]"तम जाणो हो के दो दन बाद फसह को तेवार अइरियो हे
अने मनख को बेटो सलीब (कुरुस) पे चड़ायो (टांग्यो) जावा सरु पकड़वायो
जायगा ।" [3]तो मुखपुरोहित अने लोगहुंण का सियाणाहुंण,काइफा नाम का महा पुरोहित
(महापंडित) का अंगणा माय भेळा होया , [4]अने उणने माय-माय इसु के छाने से पकड़वा
अने मारी लाखणे को मनसुबो बणायो । [5]पण वी केता था," तेवार का बखत नी, कंई
असो नी होय के लोगहुंण माय दंगो भड़के जाय ।" [6]जदे इसु बेतनिय्याह माय सिमोन
कोड़या का घरे थो , [7]तो एक बंईरा सगंमरमर का बरतन माय बेमोल अतर लईके उका
कने अई,अने जदे उ जिमवा बेठियो तो उका माथा पे रेड़ी लाख्यो । [8]पण चेला या देखीके
गुस्सा होया अने केवा लाग्या,"यो बरबाद कायसरु ? [9]इना अतर के अच्छा पइसामें(मेंगो

बेचीके) बेचीके गरीब-गुरबाहुंण के पइसा बांटी देता ।" [10]या जाणीके इसु ने उणकासे
क्यो,"तम इनी बंइराके कायसरु सताड़ो ? कंई इकासरु के उने म्हारा साते भलई करी ?
[11]गरीब-गुरबा तो तमारा साते सदा रे, पण हुं तमारा साते सदा नी रूंवां । [12]जदे उने
म्हारा अंग पे यो अतर रेड़्यो तो इकासरु रेड़्यो के म्हारा गाड़िया जावा सरु म्हारे तियार
करे । [13]हुं तमार से साँची कूं के अखा जगत माय जां कंई यो सुबसमिचार परचार करियो
जायगा,वां इनी बंइरा का काम को बखाण बी उकी रियाद में करियो जायगा ।" [14]तो
बाराहुंण माय से एक, जिको नाम यहुदा इस्करयोती थो,मुखपुरोहित कने ग्यो, [15]अने
उने क्यो,"अगर हुं इसु के तमारा हाते करी दुं तो तम म्हारे कंई दोगा ?"अने उणने उके
चाँदी का तीस सिक्का तोलिके दईद्या । [16]जद से उ उके पकड़वाणे सरु अच्छा मोका का
तलासमें रेवा लाग्यो । [17]फेर चेला अखमीर रोटा का तेवार का पेंलांदन, इसु कने अईके
पुछवा लाग्या,"तु कां चावे के हम थारा सरु फसह खावाकीतियारी करां ?" [18]उने
क्यो,"नगर माय फलाणा जणाकने जईके उकासे को, 'गरु के ,म्हारो बखत कने हे ।
म्हारे अपणा चेलाहुंण का साते थारा यां फसह को तेवार मनाणो हे' ।" [19]तो इसु का
हुकम मुजब चेलाहुंण ने फसह की तियारी करी । [20]जदे सांज होई तो उ बारा चेलाहुंण का
साते जिमवा बेठियो । [21]जदे वी जिमी रिया था तो उने क्यो,"हुं तमार से साँची कूं के
तमारा माय से एक म्हारे पकड़वायगा ।" [22]इ पे वी घणा दु:खी हुईके एक-एक करिके
उकासे पुछवा लाग्या,"परभु, हुं तो नी हुं, नी ?" [23]उने क्यो," उ जिने म्हारा साते कटोरा
माय हात लाख्यो ,उज म्हारे पकड़वायगा । [24]मनक का बेटा के तो,जसो उका बारामें
लिक्ख्यो ग्यो हे , जाण्योज हे,पण धिक्कार उ के जिकासे मनख को बेटो पकड़वायो
जायगा ! उना मनख सरु भलो होतो के उ जनमीज नी लेतो ।" [25]तो उके पकड़वाणे वाळो
याने यहुदा ने क्यो,"रब्बी, कंई उ हुं हे ?" उने क्यो," तने खुदज कई द्यो । [26]जदे वी जिमी
रिया था, इसु ने रोटो ल्यो अने आसीस मांगीके तोड़ियो अने चेलाहुंण के दईके क्यो," लो
खाव; या म्हारी काया हे ।" [27]फेर उने कटोरो लईके धनवाद करियो अने उणके देता होया
क्यो,"तम सगळा इका माय से प्यो, [28]क्योके यो करार को म्हारो लोई हे, जो नरा
लोगहुंण सरु पापहुंण की मांफी सरु बिवाड़ियो जावा पे हे । [29]पण हुं तमार से कूं के अंगुर
को यो रस अबी से लिके उना दन तोड़ी नी पीउंवां जत्तक अपणा पिता का राज माय
तमारा साते नवो नी प्यूं ।" [30]भजन गावा का बाद वी जेतुन परबत पे चल्या ग्या । [31]जदे
इसु ने उणकासे क्यो,"आज राते तम सगळा म्हारी वजा से ठोकर खावगा , क्योके

लिक्ख्यो हे , हुं ग्वाळा के मारुंवा अने खड़ु की गाडरहुंण खक्कळ- बक्कळ हुई जायगा ।"
[32]पण जिवता (जिन्दा) होवा का बाद तमार पेंलां गलील के जऊंवां ।" [33]इ पे पतरस ने
उकासे क्यो ," चाये सगळा का सगळा थारी वजा से ठोकर खावे तो खावे,पण हुं कदी नी
खउंवां ।" [34]इसु ने उकासे क्यो,"हुं तमार से साँची कूं के आज ज राते, मुरगा का बांग देवा
से पेंलां, तु तीन बार म्हारे इनकारेगा ।" [35]पतरस ने उकासे क्यो,"चाये म्हारे थारा साते
मरणो बी होय, हुं थारो इनकार नी करुंवां ।"सगळा चेलाहुंण ने बी असीज बात करी ।
[36]जद इसु उणका साते गतसमनी नाम की जगा माय आया, अने उने अपणा चेलाहुंण से
क्यो,"जत्तक हुं वां जईने पराथना करूं, तम यांज बेठो ।" [37]उने अपणा साते पतरस अने
जब्दी का बेटाहुंण के लिया अने दु:खी ने (बेकळ) बेचेन होवा लाग्यो । [38]फेर उने उणका
से क्यो, "म्हारो हिरदो घणो उदास हे, यां तोड़ी के हुं मरवा पे हुं । यांज रुको अने म्हारा
साते जागता रो ।" [39]फेर उ उणका से थोड़ोक अगड़े बड़ियो अने (सास्टांग) मुन्डा का बळ
पड़िके या पराथना करवा लाग्यो:" हे म्हारा पिता,अगर हुई सके तो यो कटोरो म्हार से
टळी जाय । फेर बी म्हारी नी, पण थारी मरजी पुरण होय ।" [40]पाछो उ चेलाहुंण कने
आयो, अने उणके सोता पईके उने पतरस से क्यो,"कंई तम लोग म्हारा सरु एक घड़ी बी
नी जागी सक्या ?" [41]जागता रो अने पराथना करता रो के तम अजमाइस माय नी पड़ो
। आतमा तो तियार हे पण काया कमजोर हे ।" [42]फरे उने दुसरी दफा जईके या पराथना
करी :" हे म्हारा पिता, अगर यो म्हारा प्या बिना नी टळी सके, तो थारी मरजी पुरन होय
।" [43]उने पाछो अईके उणके सोता पाया , क्योके उणकी आँखहुंण नींद से बोझळ थी ।
[44]उ उणके पाछो छोड़िके चल्यो ग्यो अने पाछो वाज बात कईके तिसरी दफा पराथना
करवा लाग्यो । [45]फेर उने चेलाहुंण कने अईके क्यो," कंई तम अबी तोड़ी अराम से
सोईरिया हो ? देखो,बखत अईग्यो हे अने मनख को बेटो पापीहुंण का हाते पकड़ायो
जाय हे । [46]उठ्याव, चलां । देखो म्हारो पकड़वाणे वाळो कने अई पोंच्यो हे ।" [47]जदे उ
यो कईज रियो थो तो देखो, यहुदा जो बाराहुंण माय को एक थो अइग्यो, अने उका साते
तरवार अने लट्ठहुंण लई होई एक बड़ी भीड़ थी जिके मुख पुरोहितहुंण अने लोगहुंण का
सियाणाहुंण ने मोकली थी । [48]पकड़वाणे वाळा ने उणके यो कईके इसारो द्यो थो :जिके हुं
चुम्मो लुं ,उज हे । उके पकड़ी लिजो ।" [49]उ झट इसु कने अइके बोल्यो," हे रब्बी,
परणाम !"अने उके चुम्यो । [50]इसु ने उका से क्यो, दोस, जिना काम सरु तु आयो उके
कर ।" जद उणने उका कने अईके इसु के पकड़ियो अने गिरफ्दार करियो । [51]फेर देखो,
इसु का सातीहुंण माय से एक ने तरवार हेड़िके म्हापुरोहित का सेवक पे चलाड़ी अने

उको कान काटी लाख्यो । [52]तो इसु ने उका से क्यो,"अपणी तरवार म्यांन माय
राख,"क्योके जो तरवार उठाड़े वी सगळा तरवार से नास करिया जायगा । [53]तु कंई सोचे
के हुं अपणा पिता से बिणती नी करी सकतो ? अने कंई उ झट बारा सेनाहुंण से जादा
सरगदुत के म्हारे नी समळई सकतो ? [54]पण जद पवित्तर सास्तर को लेख कसे पुरण
होयगा के असोज होणो जरुरी हे ?" [55]फेर इसु ने भीड़ से क्यो ," कंई तम तरवार अने
लट्ठहुणं लईके म्हारे पकड़वा अया हो मानो के हुं कोई डाकू हुं ? हुं हरदन मन्दर माय
बेठिके परबचण द्या करतो थो अने तमने म्हारे नी पकड़ियो । [56]पण यो सगळो इकासरु
होयो के नबीहुंण को लेख पुरण होय।"तो सगळा चेला उके छोड़िके भागिग्या । [57]जिणने
इसु के पकड़ियो थो, वी उके म्हापुरोहित काइफा कने लईग्या,जां सास्तरी अने सियाणा
भेळा था । [58]पतरस बी थोड़िक दुरी पे उका पछड़े-पछड़े चलिके म्हापुरोहित का आंगणा
तोड़ी पोंच्यो अने भितरे जईके नतीजो देखवा सरु पेरादारहुंण का साते बेठिग्यो ।
[59]परधान पुरोहित अने अखी म्हासबा इसु का बिरोधमें झुंटी गवई पावा की कोसिस
करता रिया,जिकासे के वी उके मारी लाखे । [60]पण नरा झुंटा गवाहुंण का आणे पे बी, वी
कंई नी करी सक्या । आखरीमें दो ने अईके क्यो, [61]"इना मनख ने क्यो,'हुं परमेसर का
मन्दर के ढळईके उके तीनदन माय पाछो बणई दुंवां (सकतो हुं) ।" [62]तो म्हापुरोहित ने
उबो हुईके उकासे क्यो,"कंई तु ज्वाब नी दईरियो ? इ लोग थारा बिरोदमें कंई गवई
दईरिया हे ?" [63]पण इसु चुपरियो । इ पे म्हापुरोहित ने उकासे क्यो, हुं जिवता परमेसर
की सोगन दूं , के अगर तु परमेसर को बेटो मसीह हे तो हमार से कईदे ।" [64]इसु ने
उकासे क्यो,"तने खुदीज क्यो । फेर बी हुं थारसे कूं के अब से तम मनख का बेटा के
सगळा से सक्तीमान का जिवणा आड़ी बेठ्या होया अने सरग का बादळाहुंण पे आता
होया देखोगा ।" [65]इ पे म्हापुरोहित अपणा लतरा फाड़ीके केवा लाग्यो, इने परमेसर को
(निन्दा)अपमान करियो । अबे हमारे गवाहुंण की कंई जरुवत ? देखो, तम यो अपमान
सुणिचुक्या हो । [66]अबे तमारो कंई बिचार हे ?" उणने ज्वाब द्यो , उ मोत कि सजा का
लायक हे !" [67]तो उणने उका मुन्डा पे थुक्यो, अने मुक्काहुंण से मारयो अने कोई-कोइ ने
थापड़ मारी के क्यो, [68]" हे मसीह, अगमबाणी करिके हमारे बताड़ :केने थारे मारियो ?"
[69]पतरस आंगणा माय बायरे बेठ्यो होयो थो के एक दासी ने उका कने अईके क्यो,"तु बी
तो गलील का इसु का साते थो !" [70]पण उकासे इन्कार करतो होयो उना सगळा का सामे
उने क्यो," हुं नी जांणु के तम कंई कईरी हे ।" [71]जदे उ बायरे डेळी पे ग्यो तो एक हजु

दासी ने उके देखीके उणकासे क्यो,"यो बी तो नासरत का इसु का साते थो ।" [72]तो उने
सोगन खईके पाछो इन्कार करियो : हुं इना मनख के नी जाणुं ।" [73]थोड़ीक देर का बाद
उणने जो वां उब्या था पतरस का कने अइके क्यो,"निस्चितज तु बी उणका माय से हे,
क्योके थारी बोली थारे परगटे हे ।" [74]तो उ धक्कारवा अने सोगन खावा लाग्यो:" हुं उना
मनख के नी जाणुं ।"अने झट मुरगा ने बांग दई । [75]तो पतरस के वा बात जो इसु ने कई
थी रियाद अईग्यी: "मुरगा का बांग देवा से पेंलां तु तीन बार म्हारे इन्कारेगा ।" अने उ
बायरे जईके फुटी-फुटी के रोवा लाग्यो ।

27 [1]जदे दन उग्यो तो सगळा परधान पुरोहितहुंण अने लोगहुंण का
सियाणाहुंण ने इसु का बिरोदमें एको करियो ,के उके मारी लाखां । [2]फेर
उणने उके बांद्यो अने लई जईके राजपाल के समळई द्यो । [3]जदे यहुदा, जेने
उके पकड़वायो थो, या देखीके के इसु दोसी ठेरायो जईरियो हे, तो उ पस्तायो,अने चाँदी
का तीस बटकाहुंण के परधान पुरोहितहुंण अने सियाणाहुंण के फेरीके उणकासे क्यो,
[4]"म्हने पाप करियो हे । म्हने निरदोस का लोई को सोदो करियो हे ।" पण उणने
क्यो,इकासे हमारे कंई? तुझ जाण ।" [5]तो उ उना चाँदी का सिक्काहुंण के मन्दर माय
फेंकी के चल्यो ग्यो अने जईके (गळामाय) फँदो लगई ल्यो । [6]तो मुखपुरोहितहुंण ने
चाँदी का उना सिक्काहुंण के लईके क्यो," इणके मन्दर का खजाना माय राखणो अच्छो
हयनी, क्योके यो लोई को दाम हे ।" [7]उणने माय-माय सला करी अने उना पईसा से
परदेसीहुंण के दफणाने सरु कुमार को खेत मोलिल्यो । [8]इनी वजा से आज बी उ खेत '
लोई को खेत ' केवाय हे । [9]तो उ बचण जो यरमियाह नबी से केवाग्यो थो पुरण होयो :
उणने चाँदी का तीस सिक्का ल्या, याने उ दाम जिके इसराइल की ओलादहुंण ने उका
सरु ठेरायो थो । [10]अने उणने उके कुमार का खेत सरु दई द्या, जसोके परभु ने म्हारे
हुकम द्यो थो ।" [11]तो इसु राजपाल का सामे उबो होयो अने राजपाल ने उकासे पुछ्यो,"
कंई तु यहुदिहुंण को राजो हे ?" सई, तु खुदज के हे ।" [12]अने जदे मुखपुरोहित ने
सियाणा उ पे दोस लगाड़ी रिया था तो उने कई ज्वाब नी द्यो । [13]तो पिलातुस ने उकासे
क्यो, "कंई तु नी सुणे, इ थारा बिरोदमें कतरी बातहुंण की गवई दईरिया हे ?" [14]पण उने
उके एक बी बात को ज्वाब नी द्यो । इकासे राजपाल के घणो अचम्बो होयो । [15]राजपाल
की या रीत थी के तेवार का बखत कसा एक मुलजिम के जिके लोग चाता था, छोड़ि
लाख्या करतो थो । [16]अने उना बखत उकी केद माय बरअब्बा नामको कुख्यात मुलजिम

थो । [17]जदे वी भेळा होया तो पिलातुस ने उणकासे क्यो," तम किके चाव के हुं तमारा
सरु छोड़ि लाखुं ? बरअब्बा के, या इसु के जो मसीह केवाय ?" [18]क्योके उ जाणतो थो के
उणने उके जळन से पकड़ायो हे । [19]जदे उ न्याव-सिंगासण पे बेठियो तो उकी घराळी ने
उके केवाड़ी मोकलियो,"इना धरमी मनख का मामला माय हात मति लाखजे, क्योके
आज राते म्हने सपना माय उकी वजासे घणो दु:ख उठाड़ियो हे । [20]पण मुखपुरोहित
अने सियाणाहुंण ने भीड़ के भड़कई,के वी बरअब्बा के छोड़वा अने इसु के मारी लाखणे
की मांग करे । [21]तो राजपाल ने ज्वाब द्यो,"इना दोई माय से किके चाव हो, के हुं तमारा
सरु छोड़ि लाखुं ?" उणने क्यो,"बरअब्बा के ।" [22]पिलातुस ने उनकासे क्यो,"फेर हुं इसु
के ,जो मसीह केवाय , कंई करूं ?" उना सगळा ने क्यो, " उ सलीब चड़ायो जाय ।" [23]उने
क्यो," कायसरु ? उने कंई बुरई करी ?"पण वी हजु बी जादा चिल्लई के केवा लाग्या, उ
सलीब प चड़ायो जाय !" [24]जदे पिलातुस ने देख्यो, के म्हारसे कंई बी नी बणिरियो हे
अने दंगो होवा पे हे, तो उने पाणी ल्यो अने भीड़ का सामे अपणा हात धोईके क्यो, हुं
इना मनख का लोई से बरी हुं । तमीज जाणो ।" [25]इ पे लोगहुंण ने ज्वाब द्यो ,"इको लोई
हमार पे अने हमारी ओलाद पे रे (होय) !" [26]तो उने बरअब्बा के तो उणका सरु
छोड़ियो,पण इसु के कोड़ा लगवईके सलीब पे चड़ाया जावा सरु समळई द्यो । [27]तो
राजपाल का सेनिक (सिपई), इसु के राजमेल माय लई ग्या, अने वां उका चारिमेर अखा
रोमी सेना-दळ के भेळा करि ल्या । [28]फेर उका लतरा उतारिके उणने उके गाड़ो लाल रंग
को चोगो पेरायो । [29]अने कांटा को मुगुट गुंथीके उणने उका माथा पे धरियो अने उका
जिवणा हात माय सरकंडो (एक तरां कि जाड़ा घांस की किमड़ी) द्यो । फेर उका अगड़े
गोड़ा टेकी के वी उकी मसखरी करिके केवा लाग्या," हे यहुदिहुंण का राजा, थारी जय हो
!" [30]उणने उका पे थुक्यो,अने सरकंडो लईके वी उका माथा पे मारवा लाग्या । [31]मजाक
उड़ावा का बाद उणने उको चोगो उतारियो अने उकाज लतरा उके पेरई द्या, अने सलीब पे
चड़ावा सरु लई चल्या । [32]जदे वी बायरे हिटीरिया था तो उणके सिमोन नामको एक
कुरेनी मिळ्यो । उणने उके बेगारीमें पकड़ियो के सलीब उठईके लई चले । [33]अने जदे वी
उनी जगा पे आया जो गुलगुता केवाय, याने 'खोपड़ी की जगा ,' [34]तो उणने उके पित्त
मिळयो होयो अंगुर को रस पीवासरु द्यो, पण उने चाखीके पीणो नी चायो । [35]अने जदे वी
उके सलीब पे चड़ई चुक्या तो उणने चिट्ठी लाखी के उका लतरा के माय-माय बांटी ल्या ।
[36]अने वां बेठिके, वी उको पेरो देवा लाग्या । [37]अने उणने उका माथा अदरे उको दोसपत्तर

लगाड़ियो जिमें लिक्ख्यो थो,"यो यहुदिहुंण को राजो इसु हे ।" [38]उना बखत उणने उका
साते दो डाकुहुंण के बी सलीब पे टांग्या, एक के उका जिवणा आड़ी अने दुसरा के उका
डाबा आड़ी । [39]वां से आवा-जावा वाळा उकी निन्दा करिरिया था अने माथो हलाड़ी-
हलाड़ी के, [40]कईरिया था,"हे मन्दर का ढळ्आणे अने तीन दन माय बणावा वाळा,
अपणा आप के बचाड़ ! अगर तु परमेसर को बेटो हे तो सलीब पे से उतरिया ।" [41]अस्तरां
मुख पुरोहित बी सास्तरी अने सियाणाहुंण का साते उकी मसकरी करता होया कईरिया
था , [42]इने दुसरा के बचाड़िया,पण अपणा आपके नी बचाड़ी सकतो । यो इसराइल को
राजो हे -अबे सलीब पे से उतरे तो हम इ पे बिसास करांगां । [43]यो परमेसर पे भरोसो
राखे ; अगर उ इकासे खुस हे तो अबी छुड़ई ले, क्योके उने क्यो थो,' हुं परमेसर को बेटो
हुं '।" [44]जो डाकु उका साते सलीब पे लटकाड़िया ग्या था,वी बी अस्तरां उकी निन्दा
करिरिया था । [45]दफोर से लईके तीन बजां तोड़ी अखा देस माय इन्दारो घिरियो रियो ।
[46]तीन बज्या का करीब इसु उंच्ची आवाज से चिल्लाड़यो,"एली, एली सबक्तनी ?" याने, "
हे म्हारा परमेसर, हे म्हारा परमेसर तने म्हारे कायसरु छोड़ियो ?" [47]वां उब्या होया माय
से थोड़ाक ने यो सुणीके क्यो,"यो मनख एलियाह के तेड़ी रियो हे ।" [48]उणका माय से
झट एक ने दोड़िके स्पंज के सिरका माय डुबाड़ियो ने सरकन्डा पे धरिके उके चुसवा सरु
द्यो । [49]पण बाकि लोगहुंण ने क्यो, "देखां," एलियोह उके बचाड़वा सरु आवे के नी ।"
[50]तो इसु ने पाछी उंच्ची अवाज माय चिल्लाड़िके पराण छोड़ि द्या । [51]अने देखो, मन्दर
को परदो अदरे से निच्चे तोड़ी फाटिके दो टुकड़ो हुईग्यो । धरती डोली ग्यी, सिल्लाहुंण
(चटखी पड़ी) तड़की ग्यी, [52]ने कबरहुंण खुली ग्यी, अने सोया होया नरागंज पवित्तर
लोगहुंण की लोथ (जिन्दा हुई ग्यी) जिन्दी उठ्याई । [53]अने उका पाछा जिन्दा होवा का
बाद वी कबरहुंण माय से हिटीके पवित्तर नगर माय ग्या अने नरा के नजर आया । [54]तो
सुबेदार अने जो लोग उका साते इसु को पेरो दईरिया, जदे उणने धरती कांपणो ने इनी
घटणाहुंण के देख्यो तो घणा डरिके क्यो, " साँची यो परमेसर को बेटो थो !" [55]अने वां
नरीगंज बंईरांहुंण जो इसु की सेवा करती होई गलील से उका पछड़े चल्यई थी, दुरा से
यो देखी री थी । [56]उणकामें मरियम मगदलीनी, याकुब अने युसफ की मेतारी मरियम,
अने जब्दी का बेटाहुंण की मेतारी थी । [57]जदे सांझ होई तो अरमितियाह को युसफ
नामको एक धणी मनख आयो । उ बी इसु को चेलो थो । [58]जदे उने पिलातुस कने जईके
इसु की लोथ मांगी तो पिलातुस ने उके देवाड़ी दई । [59]तो युसफ ने लोथ के लई जईके
साफ मलमल का लतरा माय लपेटी, [60]ने उने अपणी नवी कबर माय धरी, जो उने
चट्टाण माय खोदाड़ी थी । फेर एक घणो बजनदार फत्तर कबर का मुन्डा पे रड़कई के

चल्यो ग्यो । [61]मरियम मगदलीनी अने दुसरी मरियम वां कबर का सामे बेठी थी ।
[62]दुसरा दन, याने तियारी का दन का एक दन पाछे, मुखपुरोहितहुंण अने फरीसीहुंण ने
पिलातुस कने भेळा हुईके क्यो, [63]महाराज, हमारे रियाद हे के उना धोकाबाज ने अपणा
जितेजी क्यो थो,'तीन दन पाछे हुं पछो जिन्दो हुई जउंवां । [64]तो हुकम दे के तिसरा दन
तोड़ी कबर की चोकसी करी जाय, कंई असो नी होय के चेलां अईके लोथ के चोरी लई
जाय अने लोगहुंण से के, उ मरिया माय से जी उठ्यो हे ।' जद तो पाछलियो धोको
अगलिया से बी बुरो होयगा ।" [65]पिलातुस ने उणकासे क्यो, "तमारा कने पेरादार हे;
जसो बी उको बन्दोबस करी सको, वसोज करो ।" [66]तो उणने जईके कबर की चोकीदारी
करई ने पेरादार बेठाड़ीके फत्थर के सील बी करी लाख्यो (मोहर बी लगाड़ी लाखी) ।

28 [1]सबत् का बितवा पे, हप्ता का पेलां दन परोड़ाज(दन उगेज) मरियम
मगदलीनी अने दुसरी मरियम कबर देखवा अई । [2]अने देखो, घणी जोरसे
धरती कांपी , क्योके परमेसर को एक दुत सरग से उतरिके आयो अने
फत्थर के इकाड़ी रड़कई के उ पे बेठिग्यो । [3]उको रुप बिजळी जसो अने उका लतरा
बरफ सरिका धोळा था । [4]पेरुवाहुंण उका डर से कांपी उठ्या अने मरिया जसा हुईग्या ।
[5]सरगदुत ने बंईरांहुंण से क्यो, "डरो मती, क्योके हुं जांणु के तम इसु के जिके सलीब पे
टांगी द्यो थो सोदिरी हो । [6]उ यां हयनी, क्योके उ अपणा केवा का मुजब जिन्दो हुईग्यो
(जी उठ्यो हे) । आव,उनी जगा के देखो जां उ पड़ियो होयो थो । (जां उके धरियो थो)
[7]उका चेलाहुंण के झट जईके बताड़ो के उ मरिया माय से जिन्दो उठ्यायो, अने देखो, उ
तमार से पेंलां गलील के जायगा - वां तम उके देखोगा । देखो, म्हने तमारे बताड़ि द्यो हे
।" AT028008 [8]इ पे वी डरी अने घणी खुसी का साते झट कबर से पलटी अने चेलाहुंण के यो
समिचार देवा सरु दोड़ी पड़ी । (पाटी दई) [9]जद देखो, इसु उणकासे मिळ्यो अने उणके
परणाम करियो । वी उका कने अई अने उणने उका पग पकड़िके उके दण्डवत् करियो ।
[10]तो इसु ने उणकासे क्यो, "डरो मती । जाव अने म्हारा भईहुंण से को के वी गलील के
चल्या जावे, अने वां वी म्हारे देखेगा ।" [11]वी रस्ता मायज थी के देखो, पेरुवाहुंण माय से
थोड़ाक ने नगर माय जईके पुरो हाल मुखपुरोहितहुंण से कई सुणायो । [12]तो उणने
सियाणाहुंण का साते भेळा हुईके एको करियो अने सिपईहुंण के नरा रुप्या दईके
[13]क्यो," लोगहुंण से को जो,'राते जदे हम सोईरिया था तो उका चेलाहुंण अईके उके चोरी

लईग्या ।' [14]अने अगर राजपाल का कान तोड़ी या बात पोंचे तो हम उके समझाड़ी दांगा
अने तमारे संकट से बचई लांगा ।" [15]उणने रुप्या लईके जसो सिखाड़ियो (बताड़ियो) थो
वसोज करियो । या बात यहुदिहुंण माय दूर-दूर तोड़ी फेली ग्यी जो आज तोड़ी चलणमें
हे । [16]बादमें, ग्यारा चेलां गलील का उना परबत पे ग्या जिके इसु ने बताड़ियो थो, [17]अने
जदे उणने उके देख्यो तो उके दण्डवत् करियो, पण कोई-कोई के सक होयो । [18]तो इसु ने
उणका कने अईके क्यो,"सरग अने धरती को सगळो हक म्हारे द्यो ग्यो हे । [19]इकासरु
जाव, अने सगळी जात का लोगहुंण के चेला बणाव ने उणके बाप,बेटो अने पवित्तर
आतमा का नाम से बपतिस्मो दो, [20]अने जो जो हुकम म्हने तमारे द्या उको पाळन
करनो सिखाड़ो । अने देखो, हुं युग का आखिर तोड़ी सदा तमारा साते हुं ।"